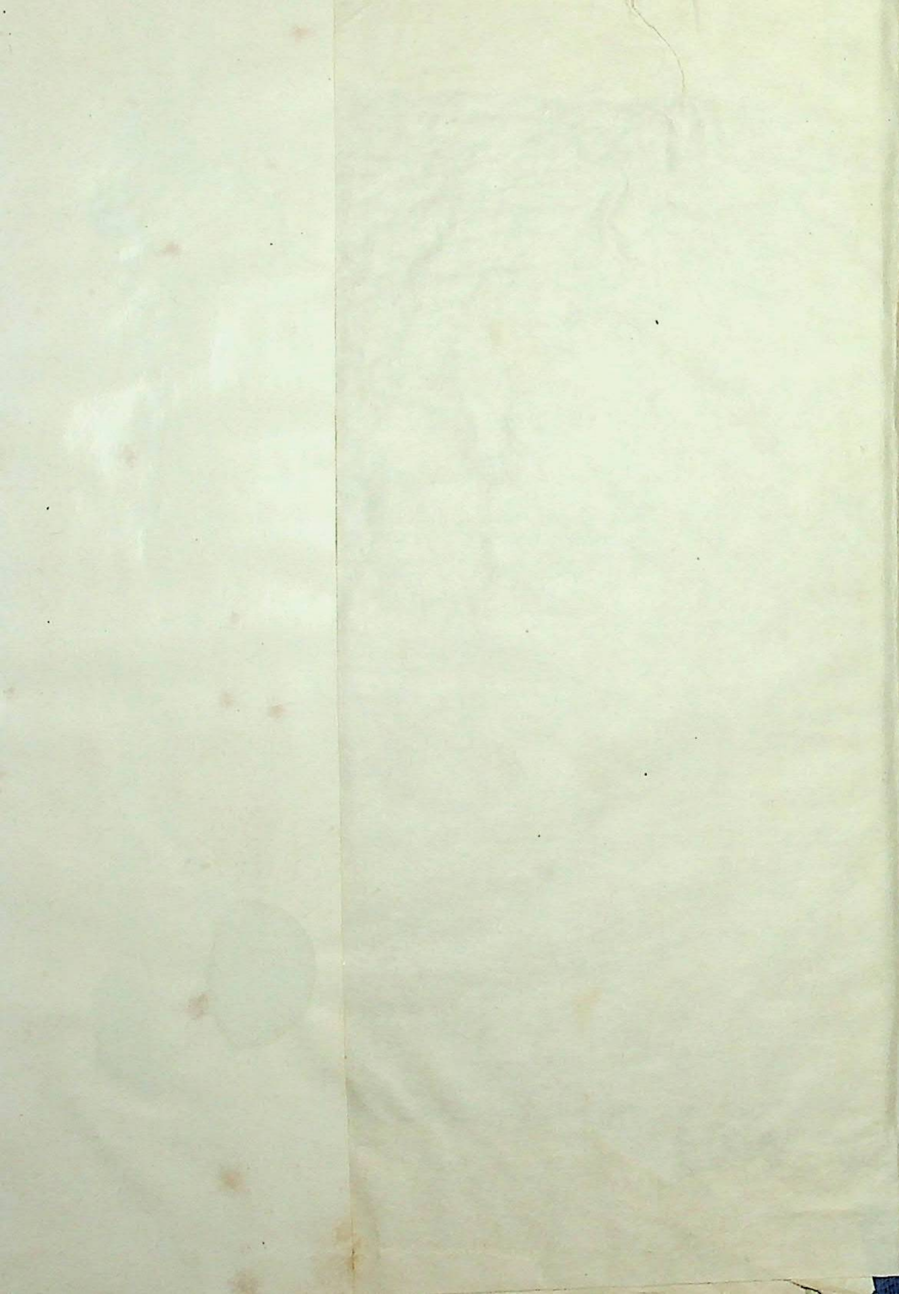
ढाड़ै धरती है

सपन माला





(3) 22

Donated
by
B.N. Bhem
Gen. Secty
16.5-83

धरती दे हाड़े

सपन [illegible]

गुलाब प्रकाशन मण्डल
पक्का डंगा, जम्मू

संग्रह कर्त्ता
विजय सुमन

प्रकाशक
गुलाब प्रकाशन मण्डल
पक्का डंगा, तम्मू

प्रथप संस्करण : 1979

मूल्य : 12 रुपये

मुद्रनालय
रमेश आर्ट प्रेस, जम्मू

ब्योरा



प्राण !

तुहाडियां सृजनां,
तुहाडी सतत्त साधनावां
में तुहाडे ही
स्नेहियां, प्रशंसकां
प्रते पूजकां नूं
भेंट करन दा हिया
कर रिहा हां,
जिस दे बारे
में भरी सभा विच
वादा कीता सी ।
मेरे वचन दी
दूसरी कड़ी
स्वीकारो ।

तुहाडा
—विजय सुमन

सच केहा सी

मिर्ज़ा ग़ालिब ने, केहा सी कि :—

बेकारी-ए-जनूं को है सर पीटने का शग़ल
जब हाथ टूट जाएं तो फिर क्या करे कोई।

शारीरक सम्बन्ध टुट्ट ही जांदे ने, एह घाव समें भर वी देंदा ए, पर ग्रत्मा दे सम्बन्ध कदे नहीं टुट्टदे। रोना ते सिर भन्नना जिसदी तक़दीर बन जांदी ए, ग्रो हत्थ टुट्ट जान ते होर वी व्याकुल हो उठदा ए।

कुज ऐवा जेहा ही जन्म जन्मांतरां दा मेरा तुहाडा सम्बन्ध ए, ते ऐसे सम्बन्ध ने मैनूं किसे जोगा नहीं छड्डेया—तुसां ग्राप वी ते केहा ए :—

पैरों हेठों किसके भोइं
साथी जद छड्ड जावन ग्रधवाटे
चीक जही ब्राह्माड च गूंजे—
जद दुखिया दी पीड़ तराटे

फेर ग्रो ज़िम्मेदारियां ग्रते नक़श जेहड़े तुसीं मेरे लेई छड्ड गए ओ, ग्रोहनां दे भारां ने मैनूं ग्रत्त हौला कर छड्डेग्रा ए। एह सब कुज निभौन दी मेरे विच न ते हिम्मत सी ते न हौसला—पर हारे होए वचनां दी दूजी कड़ी पूरा करन लेई मैनूं प्रेरेया ए डा० एल० सी०

गुप्ता, श्री मोहन महाजन, श्री निसार देहलवी, श्री श्याम साहिल, श्री वीरेन्द्र वडेरा, कुमारी शकुन्त दीप माला, कुमारी सरोज मुक्त माला कुमारी विजय माला ग्रते कुमारी सरिता योग माला ने। जिन्हां रल के 'सपनमाला मैंमोरियल कमेटी' बना के एस महान काज नूं रम्भेया।

मैं ग्रात्मिक सम्बन्ध दी गल्ल कर रिहा सां। उस दिन श्री बलदेव प्रसाद शर्मा होरां मेरे भ्रा 'निसार' नूं केहा सी 'सुमन इन्ज मुर्दा न हुन्दा जे ग्रोसदे सपन माला नाल निरे शारीरक सम्बन्ध हुन्दे, ओस नूं ते दो आत्मावां दा चिर विछुड़न मार गया ए"।

'जोश' मलीहाबादी ने ठीक ही ग्राखेया ए :—

इश्क की शाखें किसी आंधी से झुक सकती नहीं
रूह की सरगोशियां मरने से रुक सकती नहीं।

ऐहो सरगोशियां उठदे, बैंहदे, चलदे फिरदे, जागदे, सुत्ते दे मैंनूं एहसास करवांदियां ने, सपनमाला दी, मेरी प्राण दी होंद दा, जेहड़ी इक पल वी मैंथों विछुड़ नहीं सकदी। जीवन दे इक्को लक्ष्य नूं लै के साह लै रिहा हां कि तुहाडियां सारियां साधनावां किताबी सूरत विच ग्रा जान, तां जे ग्राऊन वालियां पीढ़ियां एस लगन ते गर्व कर सकन।

कुज लोक एस नूं साहित्यक यज्ञ वी कैंहदे ने—गल ते ठीक है पर वेखना ऐ कि एस यज्ञ विच कौन कौन पूर्ण ग्राहुती पांदा ए।

मैं श्री करण सत्तवन्त ग्रते श्रीमती सुरजीत कौर ग्रते सरदार ग्रमरीक सिंह होरां दे नाल नाल ग्रोहनां सबनां स्नेहियां दा ग्रभारी हां, जेहड़े मैंनूं एस महान कम्म लेई बराबर प्रेरणा देंदे चांदे ने। मैं तुहाडी प्यारी बेटी ग्रन्ना अते ग्रोहदे मां दे प्रति प्यार दा सुख माणना जद ओ मां दी गल्ल करदे करदे भापे भण्डारी नूं नहीं भुलदी।

प्राण ! मैं परमात्मा अग्गें कोई प्रार्थना नहीं करदा पर एह कामना ज़रूर करदा हां कि तुहाडी आत्मा दा वास इस मन्दिर विच सदा रहना चाहिदा ए, जिस विच तुहाडे पुजारी बड़ी श्रद्धा नाल नत्त मस्तक हुन्दे हन ।

मैं एह वी कहनां चाहनां कि श्री निसार देहलवी, भावें अखिल भारतीय साहित्य सदन या पंजाबी अदबी संगम दी मीटिंग होवे, हर मीटिंग तुहाडे ही कलाम नाल शुरू करदे ने ते फेर मीटिंग इच कई कई कई वार तुहाडे शेर पढ़दे ने ।

श्री श्याम साहिल दी ते तुसीं अराध्य देवी हो जिस ते पुष्प चढ़ाना ओ कदे नहीं भुलदा, ते प्यारी अन्ना अपनी मां दी तस्वीरां नूं स्वच्छ ते साफ रखन दा पूरा जतन करदी ए ।

साहां दा सिलसिला चलदा रिहा, तां छेती ही फेर तुहाड़ी इक होर किताब छापन दा उपराला करां गा ।

तुहाडा ही
विजय सुमन

मुमताज़ शायरा

ग्रांजहानी मोहतरमा सपन माला का नाम-ए-गरामी ज़ुबान पर ग्राते ही, या उन का ज़िकर-ए-ख़ैर सुनते ही मेरी ग्रांखें ग्राज भी नम हो उठती हैं और कई बार तो मैं सर धुनने लग जाता हूं। क्या शख़्सियत थी, क्या बावक़ार ख़ातून ग्रौर कितनी हमदर्द और ख़लीक थीं। उन का घर सचमुच एक ज़्यारत गाह है जहां हर दुःखी दिल पर वो ख़ुद तसकीन की मरहम रख दिया करतीं। बहुत दुखी ग्रौर मायूस इन्सान रोता हुग्रा उनके पास ग्राता ग्रौर नए हौसले, नई शगूफ़तगी ग्रौर ताज़गी ले कर जाता। यही वह मन्दिर था जहां ममता ग्रौर प्यार बिन मांगे मिलता था।

ग्राप की डोगरी, पंजाबी, हिन्दी या उर्दू के कलाम पर मैं तबसरा नहीं करूंगा ग्रलबत्ता उन ग्रौसाफ-ए-हस्ना का ज़िक्र ज़रूर करूं गा जिस ने उन को हर दिल अज़ीज़ी बख़्शी थी ग्रौर शोहरत के बाम-ए-सुरैया तक पहुंचा दिया था—पंजाबी ग़ज़ल में उन्हें मलिका हासिल था—यहां तक कि एक पड़ोसी मुल्क के टेली-विज़न तनकीद नगार ने उर्दू ग़ज़ल की बात छेड़ी और मोहतरमा सपन माला को ख़राजे तहसीन पेश करते हुए ग्रौर बातों के इलावा यह भी कहा—

"यह सपन माला ही थीं जिन्हों ने पंजाबी ग़ज़ल की उंगली पकड़ कर मैदान के एक सिरे से दूसरे सिरे तक बड़ी कामयाबी के साथ पहुँचा दिया—काश ! वो कुछ और बरस ज़िन्दा रहतीं—"

ज़ुबानों का अमीर होना या हर दिल अज़ीज़ होने का इनहसार इस बात में नहीं कि उस की कितनी किताबें छपी हैं, बलकि इस बात में है कि उसे किस ने कितने नए अलफाज़ दिए हैं ? बंगाली भाषा को अगर महा कवि टैगोर, शरत चन्द्र और बंकिम चन्द्र चैटरजी आदि ने अमीरतरीं बनाया है तो बिला शुबहा पंजाबी ज़ुबान को नए अलफाज़ देने में जिन आलमों का ज़िक्र किया जा सकता है उन में सपन माला का नाम भी बड़े एहतराम से लिया जाए गा ।

उन की कई किताबें छपीं उन पर इनामात भी मिले मगर किसी ने कभी भी उन को अपनी किताब में से कुछ पढ़ते नहीं सुना, वह हमेशा अपनी ब्याज़ से ही पढ़ती थीं । उन की जो किताबें छप कर लोगों के हाथों तक पहुँची वो सब श्री विजय सुमन जी की काविशों का नतीजा था । वरना वो सिर्फ लिखना और लिखे जाना ही अदब की रियाज़त समझती थीं ।

ज़ेर नज़र पंजाबी किताब "हाड़े धरती दे" माला जी के ग़ैर मतबूआ कलाम की एक और कड़ी है आप देखें गे कि इस में भी उन्हों ने कितने नए अलफाज़ पंजाबी अदब को दिए हैं—अगर श्री विजय सुमन के उलझे हुए सांस और बढ़े तो कम से कम माला जी की दो और पंजाबी कलाम के मजमूए पाठकों के हाथों में होंगे । और अगर कभी उन का "गालिब पंजाबी लिबास में" छप सका तो वो उनकी पंजाबी अदब, और पंजाबी के परस्तारों को अज़ीम देन

होगी। मगर यहां भी शर्त श्री विजय सुमन के सांसों की है जो उन्हीं की तरह घुल घुल कर कांटा हो रहे हैं।

"ग़ालिब" को पंजाबी लिबास में छापने का दोनों ने ही एक तस्सवुर बनाया था—एक सपना लिया था, काश ! उस सपने की ताबीर हलावत आफरीं साबित हो ! श्री विजय सुमन के बारे में एक शेर कहूं :—

फिर न कहिएगा किसी से दावा - ए - इश्क़ है गल्त
हम ने तुम्हारे इश्क़ में, मर कर तुम्हें दिखा दिया

खुशी का मुक़ाम है कि माला जी के मोती (शागिद और शागिर्दाएं) उन्हीं असूलों की आबयारी कर रहे हैं जो माला जी को बेहद अज़ीज़ थे। उनकी पाक याद, दूसरों के लिए हमदर्दियां और हर मज़लूम के लिए कुर्बानियां, रहती दुनियां तक हमारे सीनों को गरमाती रहें गी और इन्सानियत के लिए प्यार का दरस देती रहेंगी।

अफरीक़ा के रगिस्तान में जितने रेत के ज़र्रे हैं उन से ज़्यादा अलफाज़ मेरे ज़ेहन में माला जी की शायरी और हुसन - ए - इख़लाक को सफा - ए, कुरतास पर लाने के लिए कुलबुलाते हैं, मगर वफ़ूरे जज़बात से मैं मग़लूब हो जाता हूं कलम रुक जाता है और आंखों की नमी बढ़ जाती है। इउ धुन्ध में मैं खुद को गंबा देता हूं।

माला जी के ग़ैर मतबूआ कलाम को छापना एक अज़ीम काम है और फिर इस दौर में तो उस का तस्सवुर भी मुहाल है, मगर फिर भी एक मोहूम उमीद के सहारे में और मेरे साथी उमीद का दामन नहीं छोड़ रहे हैं। माला जी जे पूरे कलाम को छापने के लिए हमें श्री विजय सुमन साहिब की अपनी ग़ैर मतबूआ एक दर्जन

किताबें, उन्हें हम छाप सकते हैं बाद में भी—क्योंकि वो उन्हें तरतीब दे चुके हैं—मगर माला जी कलाम जो कागज़ों के कई पुर्जों पर लिखा है उसे सम्भाल कर तरतीब देना सुमन जी के बस का हो रोग है ।

उन को सिर्फ यह यक़ीन जिन्दा रखे हुए हैं कि उन की प्राण हर लम्हा उन के आस पास रहती है, बस उसी बात के सहारे वो आज-कल भी दिन रात लिखते हैं—वो "सीमाब" के इन शेरों को बार बार हमें सुनाते हैं :

मौत तो इन्सान फानी के लिए क़ानून है
फितरते शायर बक़ाए खास की ममनून है

नक़्श-ए-शायर फितरतन नक्शे-फना पैरा नहीं
यानी उस की जिन्दगी में मौत का झगड़ा नहीं

ज़िन्दगी उस की निशात-ए-रूह की तफसीर है
मौत उस के महव हो जाने की इक तस्वीर है

और में यहीं, माला जी की अज़ीम रूह को खराज-ए-अक़ीदत पेश करता हूँ और तमन्ना करता हूं कि हमें तौफीक़ अता हो कि हम उन के ग़ैर मतबूआ कलाम की तीसरी कड़ी पेश करने के क़ाबिल बन सकें क्योंकि उस आत्मा के लिए यही हमारी श्रद्धांजली होगी ।

बी० एन० 'निसार' देहलवी

प्रधान

सपन माला मैमोरियल कमेटी

जम्मू

श्रीमती सपन माला नूं भेंट

ग़ज़ल

असीं तां जी रहे हां, करन लेई सजदे मज़ारां नूं
असां तां अलविदा आखी, तां आखी क्यों बहारां नूं

हज़ारां भेत गीतां दे, लुका सीने दी तह अन्दर
पए सुत्ते जगावे कौन ओहनां राज़दारां नूं

"सदा माला नहीं फिरदी, सदा पूजक नहीं रैंहदे"
ए कह के तुर गए ओ, कीह पता, केहड़े देयारां नूं

हुन माला सपनेयां दी अरश तों आवाज़ देंदी ए
मेरा आदाब ए, मेरे वतन दे साहित्यकारां नूं

श्रीमती सुरजीत सखी
जम्मू

माँ

कद तेरी खिड़की
मेरे लेई टैलीविज़न दा पर्दा सी
जिस उत्ते आप मुहारे
अचन चेत
मेरी नज़र दा पैंदी ।

परछाईयां पर्दे ते उभरदियां
अलोप हो जांदिया
तूं लभदी, ते इंज जापदा
जीवें ग़ज़ल भेस वटा
सामने आ खलोती होवे
रात बातां पा रही होवे
अम्बर चुप होवे
ते तारे हुंगारे भर रहे होवन ।

कु० चांद दीपिका

सपनमाला

सपन माला कवि दरबार दी इक शान हुंदी सी
पंजाबी शायरी दी रूप रेखा, जान हुंदी सी
'माला' जिस दी कविता सुन के सारे झूम उठदे सन
ग़ज़ल दे साज़ दी बड़ी मिट्ठी तान हुंदी सी

ख्यालात इन्क़लाबी, क़लम सी बेबाक़ माला दी
ओ सहेली शारदा देवी दी, रूह सी पाक माला दी
ओहदी कानी ने भय, भारत दे वैरी नूं जेहा पाया
जदों तक रहेगी एह दुनियां, रहेगी धाक माला दी

पुराने पथं करके बंद, नवियां पा गई लीहां
ओ जीवन ला के लेखे, कर गई पक्कियां नीहां
ओहदे हर शेर चों 'दानिश' मिली ए सिखया सानूं
कोई तारीफ करदा सी, ओ कैंहदी सी 'में कीह हां'

देस राज दानिश
सं० चढ़ता सूरज
कठुआ

ग़ज़ल

ग्रा उमरे दो गल्लां करिए, कर लेइए दुखां दे काटे,
बोटां नूं खम्ब मिलन सार ही, ग्राल्हनेयां दे विच सन्नाटे।

लट-लट बलदी चिखा चढ़े ने, ग्राहां ग्रनखां दे गबराटे,
मचे होए पा खून मचा गए, मच न पेई दीवे दी लाटे।

चाननी हो गई सारी नंगी, बदलां दे जां भोषण पाटे,
सूरज दे घर ग्रग्नि है नहीं, धरती नूं निघ्घां दे घाटे।

पैरों हेठों खिसके भोईं, साथी जद छडु जावन अधवाटे,
चीक जेही ब्राह्मांड च गूंजे, जद दुखिया दी पीड़ तराटे।

हर सोका हरिया जाना ऐ, जद ग्राऊने ने सौन फनाटे,
करो मजूरी खाग्रो चूरी, बड्डेयां ने एह बोध बुझाटे।

दुषित ग्रन्न ते कलुषित बुद्धि, भ्रष्टे पए सब जीवाटे,
हर बूहे ते जन्दरा बज्जा, हर ग्रांगन विच ग्राटे बाटे।

बड्डे ढिड्डीं उजड़े वेखे, शाबाशे, जीभे दिए चाटे,
बुड्डे घोड़े लाल लगामां, भस्स पेई दी चिट्टे भांटे।

कोढ़ छुपाऊना ऐं, कोहज लुकाग्रौना ऐं,
मुंह ते मल मल सुक्के ग्राटे।

तारेआं दी लो मद्धिम प गई, जद अम्बर ने नैन उघाटे,
वेले मुंहओं लत्थो लोई, रब्ब ने मारे झुंगल माटे।

टल्ल वजा के हत्थ दुखे ने, सजदे कर कर मत्थे पाटे,
भिट्टे दे "माला" दे मनके, कद करवांदे, रब्ब मिलाटे।



दन्दां दी बीड़ जीभ दा जन्दर बनी रही।
बिन खम्बों बात उडरी रही फेर फेर वी।
'तारेयां भरे हुंगारे'

कविता

वधो देश दे बांकेओ जवानों
ए सीमा दे राखे, सिपाहियो जवानों
ते लैहरां दे सिरजे नवें ही तूफानों

एह धरती तुसां दी, तुसां दे नमेती
लहू दान मंगदो है, बंजर बरेती।

वतन दी शमां ते सड़ो बन पतंगे
रहो देश प्यारां इच तन मन थीं रंगे
अगेरे वधो लै के झंडे तिरंगे

एह धरती दी गोदी बड़ी है सुखेती
लहू दान मंगदी है; बंजर बरेती।

किसे दा कोई कासा खाली रहे ना
लहू पीनों प्यासा सवाली रहे ना
कदें मुड़ निरासा, धमाली रहे ना
एह वीरां दी धरती है उसरे गी छेती
लहूं दान मंगदी है, बंजर बरेती।

रलो साथियो, संगिओ, सच्चे मितरो
समें दी शिला ते नवें चित्र चितरो
तली धर के जानां, ते मैदान नित्तरो

नवें पैर उकरो, कोई भाले न भेती
लहू दान मंगदी है, बंजर बरेती।



गीत

मेरे मन ! मन्न कोई मेरी मन्न
अपने ठूठे, बेदर्दा ! न सिर पराए भन्न ।
मेरे, मन मन्न.........

भूठ, फरेब, दगा, मक्कारी
इन्हां चौहां नाल छड्ड दे यारी
तूं राजा, अते एह ने भिखारी
परां एह क़ासे भन्न......

मेरे मन ! मन्न मेरी कोई मन्न ।

भले करमां दा खट्टेआ खा लै
ज्ञान दी भट्ठी, देह तपा लै
तन दे चोलेयों दाग मिटा लै
गूढ़े हो गए हन......

मेरे मन ! मन्न मेरी कोई मन्न ।

काम, क्रोध, मोह, लोभ, हंकारी
एह पंज ने तेरे दुश्मन भारी
एह लुटदे ने कुल संसारी
थां थां ला के सन्न......

मेरे मन ! मन्न मेरी कोई मन्न ।

कण्डे बीजें, ते फुल्ल मंगें
साह मारें ते मुड़ साह मंगें

भिक्ख मंगेया तूं रता न संगें
धन्न जिगरा, तेरा धन्न......

मेरे मन ! मन्न मेरी कोई मन्न ।

निक्त खाना एं भूठ निवाला
पीवें निस दिन, ज़हर प्याला
फेरें, बैह बैह पुट्टियां "माला"
पिच्छों चढ़ावें चन्न......

मेरे मन ! मन्न मेरी कोई मन्न ।
अपने टूठे, बे दर्दा ! न सिर पराए भन्न ॥



मेले च भाल, व्यर्थ है इक विछुड़े मीत दी,
बेड़ी दे खिन्डे पूर, मुड़ उमरीं नहीं मिले ।

'अम्बर चुप रिहा'

ग़ज़ल

कीह वेखां मुंह, मैं शीशे चों, मुहासे ने ते छाईयां ने,
समें दी धूड़, अट्टेया सिर, ते पैरां विच ब्याईयां ने।

करां कीह मौत दे हीले, करां कीह जिऊन दे चारे,
पछेरे ने खुने दे खूह, अगेरे वी ते खाईयां ने।

न किधरे दोस्ती मेरी, न किधरे दुश्मनी मेरी,
परे रह के इन्हां सांझां तों, मैं घड़ियां लंगाईयां ने।

जिन्हां राहां तों सब ने लंघना एं, ओ राह नहीं मेरे,
मैं अपने वास्ते नमियां ही पग - डंडियां बनाईयां ने।

नहीं चन्न ते सूरज जिस थां, में उस थां आ खलोती आं,
घनेरे जहे हनेरे ने, ते घिरियां घोर स्याहियां ने।

मेरा पल्ला नहीं उजला, ते पूंजां मुंह कीह अपना,
इन्हां धुंधां नहीं लथना, जो हुन चेहरे ते छाईयां ने।

सकी न दौड़ मैं अत तेज़, तां मुंह भार डिग्गी हां,
मेरे प्यारां दी ब्याईयां ही, आखिर कम्म आईयां ने।

तूं बुज्झें पीड़ की मेरी, जे उठी चीस नेईं तैनूं,
तूं हस्स छडेआ सुदाईया वे, दुहाईयां ने दुहाईयां ने।

मेरे सम्ब गए असासे सब, तेरे भर गए खज़ाने ने,
मैं कंगली हां, ते तूं राजा ऐं, एह वंडां किस ने पाईयां ने।

जो "माला" जप तेरे नां दी, करन धोखे अते ठग्गियां,
ओही निंदक, तेरे पूजक, अजब तेरियां खुदाईयां ने।



पंज पाण्डवां नूं आखो, हुन द्रोपदी नग्न है;
कोई होर नार भालो, हुन इस दा खेहड़ा छड्डो।

'तारेयां भरे हुंगारे'

तूं

□

भारत दी किश्ती दिए कड़िए, देश दिए पतवारे
सीर तेरे दे हुन होए ने, सच्चो - सच्च निस्तारे
हुन समता दे गूढ़े - गूढ़े, पैन पए झलकारे
नी कशमीरन, डोगरिए, नी पंजाबन सन्नारे

तूं सेवा दा ब्रत लै जन्मी, लक्ख तेरे श्रद्धालू
तेरे राहीं हर कोई अड़िए, उजले दीवे बालू
बलदे दीवे दी लो, ते कोई अनखी चरबी घालू
उस चरबी विच कोई चितेरा, तेरी सूरत ढालू

सूरत दी सूरत दे झौले, होर वी कई उलीकन
नवीं तेरी तस्वीर मढ़ौनी, होर वी कई उडीकन
उडीक अत्त दी होए सुखेरी, सम्बे युगां न तीकन
तेरे साहां दी बत्ती, पा - पा लहू वसीकन

अम्बर ते बिखराया सोना, पा सुरमा मुटियारे
जड़े सितारे चुन्नी तेरी, शरमा गए ने तारे
कर के मुंह बदलां दे ओहले लुक गए ने सारे
रुत्तां दे खेड़े नी सारे, तैथों सदक़े वारे

तेरे नयनीं खिड़ेया चानन, लत्था चन्न अकाशों
तूं सब दी रुशनावें मंज़िल, चौं गुट्ठों चौं पासों
केसर दी खुश्बू पेई फुटदी तेरे महके स्वासों
शरबत सन्दली मुड़का तेरा, जनता दे विश्वासों

सन्ध्या दी लाली खिलरी दी, मत्थे बिंदी ला लै
पौनां दियां पंजेबां छनकन, अपने पैरीं पा लै
ममता दी कोई मिट्ठी लोरी, इक हेक नाल गा लै
धरती चा लै तलियां ते नीं, अम्बर मोहडे चा लै

खेतां बिच खलियानां विच, तूं बन - बन पौनां रस्सीं
बन के प्यार दी बदली नी तूं, सड़दी थां ते वस्सीं
पत झड़ां दे विच नी लाडो, बन-बन ब्हारां हस्सीं
तूं सोहनी, तूं हीर नी अड़िए, तूं साहिबां, तूं सस्सी

कोई नवां ही दाता तेरा, नवां नहीं कोई सवाली
नवां फुलेरा कोई नहीं तेरा, नवां नहीं कोई माली
पाली नवां नहीं कोई तेरा, नवां नहीं कोई हाली
सादी सौखी, रैहनी बैहनी, हर पासे खुशहाली

तेरी गोदे सूरज बैठा, भखेया - भखेया वेहड़ा
तेरी कुक्खों मोती जवाहर, लाल नहीं जमेया केहड़ा
तेढ़ समाजी पूर गाए जो, ला गए ऐसा गेड़ा
भक्त सिंह जेहा वीर सपूत, भाग जगा गेया जेहड़ा

रोड़े छनकर चुक चुका के, धरती घड़ी वडेरी
बागों - बागों कलियां चुन के, भरी इक चंगेरी
केर - केर नयनां चों मोती, गुन्दी माल लमेरी
इक 'माला' दे सारे पूजक, मुक्की तेरी - मेरी



सद भावनां दे रिश्ते, रैंहदे सदा सदीवी,
एह साका चारियां तां, मोड़ां दे मोड़ तक ने ।

'माला'

गीत

इक चन्न झमक्के मारे, भई बल्ले बल्ले,
नाले चमकन तारे, भई बल्ले बल्ले।
खेडन अखियां दे वेहड़े लै हल्ला शेरी
हंजू प्यारे खारे, भई बल्ले बल्ले।

जम्मे हन कच्च दे पुतले लै हल्ला शेरी
सारे टुट्टन हारे, भई बल्ले बल्ले।
खोह दिल हो गए राही लै हल्ला शेरी
प्रीतां दे हत्यारे, भई बल्ले बल्ले।

मौती दा काहदा हाड़ा लै हल्ला शेरी
जद उमर ही ला गई लारे, भई बल्ले बल्ले
इक जिंद विहाजी साईयां, लै हल्ला शेरी
बैह शगनां दे खारे, भई बल्ले बल्ले।

असां मनस पूज के छोड़े, लै हल्ला शेरी
एह अरमान बेचारे, भई बल्ले बल्ले।
बौढ़ीं वे तबीबा बौढ़ीं, लै हल्ला शेरी,
मुड़ नहीं चलने चारे, भई बल्ले बल्ले।

सांवे जगदे नहीं दीवे, लै हल्ला शेरी
'माला' दे लिशकारे, भई बल्ले बल्ले।



दोहे

रूह लेई उमरां दण्ड है, उमरां लेई रूह दण्ड,
एह भण्डां दी दोस्ती, भण्डे गए हन।

सूई दा नक्का नहीं, धागा गण्डो गण्ड,
इक भीषण सर कज्जना, श्रो बी चलेया हण्ड।

मेले इच लुट्टे गए, किसे न पाई डण्ड,
राखे जेहड़े नाल सी, नस्से दे के कण्ड।

मन दे भोले बाल मुंह, खिच्च के मारी चण्ड,
पंजे उंगलां उभरियां, लासां ने प्रचण्ड।

ज़हर परीठा सजनां, उमरां पा के खण्ड,
हर बुरकी हत्यारनी, साहां खादी वण्ड।

किस मूर्ख ने आप ही, वेहड़े बीजी जण्ड,
जण्डी हेठ खलोतेया, ढो कण्डेयां दी पण्ड।

जम्मन पीड़ां जरदेआं, कोई कोई फुट्टे सण्ड,
सुख गृहस्थी दे ब्यानदी, टांवी टांवी रण्ड।

इक्को अग्ग उदारनी, नाश्रों वखरी वण्ड,
हवन दी अग्ग प्रचण्ड है चिखा दी अग्ग अखण्ड।

सरकण्डे दी राख नू, पल पल सुटेया छण्ड,
मौलन हारे घाव ने, बझदा पेया खरण्ड।

थोथे पोथे रच रचा, सब नूं देवन दरण्ड,
भाई, पण्डित, मौलवी, त्रैई लोकी पाखण्ड।

□

उग्गी नहीं पनीरी, फुट्टी नहीं अंगूरी,
सपने मैं बीज बैठी, किस चन्दरी तरीके।

'तारेयां भरे हुंगारे'

ग़ज़ल

समें दे रथ नूं डक्को डोले, हत्थ अनाड़ी फड़ियां रासां,
केहड़ा चातुर लंघेया ऐथों, सेए गईयां सुम्भां दियां घासां ।

इक वी पैर पवे ना सिद्धा, साह चढ़या दा फुल्लियां नासां,
किस रहबर दी फड़ के उंगली, मैं अपनी मंजिल वल जासां ।

चांदी दे घोड़े ते चढ़ के, लभ्भन नूं सोने दियां खानां:
हत्थ इच कच्च दा छांटा है नहीं, मुड़ कीवें बागां परतासां ।

हर इक राह गवाची होई ए, हर पगडण्डी मल्ली होई ए,
केहड़े चौराहे ते खल के, मैं हुन दिल दी गल्ल सुनासां ।

खबरे किस किस घर दियां कंधा, रखन चोरां नाल यराने,
किस अंगन ते रख भरोसा, मैं कंचन जेही देह लुकासां ।

उम्र नूं काहदे ताने-मीहने, काहनूं मौत नूं भण्डी जावां,
रुस्स शरीर गया है मैथों, दित्ता ए दग़ा मेरे स्वासां ।

पंज राक्षसां कीते धावे, होई तन नूं पो न कोई,
इक्के मार ज़मीर दी ऐसी, रुह ते पै पै गेईयां लासां ।



गुरु नानक

हे गुरु नानक धन्न तेरी कमाई,
कमाई दा सत्कार करदी ए लुकाई।

हनेरे दी चादर बड़ी ही घनी सी
न हत्थ, हत्थ नूं सुज्झे, जेही आ बनी सी
किते रौशनी दी, अनी न कनी सी
तां गगनां तों सूरज दी लीक इक आई
गुरु नानका धन्न तेरी कमाई।

उस हर खूंजे बाले सी चानन दे दीवे
ते चानन ओ, जिसनूं कोई ला डीक पीवे
ते पी-पी के मोए वी, मर-मर के जीवे
कठिनता च बनेया, ओ सब दा सहाई।

ओ सोके च बनेया सी सावन फुहारां
ते बंज़र च खिड़िया सी पुंबलां हज़ारां
प्यारे वधाए सी उसदे सवारां
ते सोभी ओहदी ने नवीं लीह लाई
गुरु नानका ! धन्न तेरी कमाई।

न हिन्दू, न मुस्लिम, न सिख, ईसाई
ओहदे सारे अपने, ओ सब दा भाई
ते उसरी दी मज़हबां दी उस कन्ध ढाई
ते उच्चे ते नीवें दी वितकर मिटाई
गुरु नानका ! धन्न तेरी कमाई।

ओ चढ़ेया तूफान चढ़ बिन बेड़ी ठलेया
भूंचाल आया, ओ पैरों न हलेया
जो गल वकड़ी पा पा, अछूतां नूं मिलेया
ओहदे गांवदी गुण सी सारी लुकाई
गुरु नानका ! धन्न तेरी कमाई ।

ओ काशी दा पूजक, ते मक्के दा चाहक
ओ सुच्चे दा बीचक, ते सच्चे दा गाहक
ओ हकदार बनेया, न किधरे वी नाहक
बस इक ओम विच उसदी सारी पढ़ाई
गुरु नानका ! धन्न तेरी कमाई ।

हर इक दुखिए लेई, उसदे दिल विच सी पीड़ां
उस इक एकता दे लेई, बन्नियां सी बीड़ां
समूह भीड़ लेई. उसने सिर चाईयां भीड़ां
ओहदे नां दा सिमरन, करे अज्ज खुदाई
गुरु नानका ! धन्न तेरी कमाई ।

□

अक्खियो नीं

अक्खियो नीं—तुसां क्यों नहीं डिट्ठा
कन्ध तों लंघदा ओ छौरा—

ओ छौरा ! जो सार सुनेरे
फड़ पल्ला न तुरेया—
तुरेया ते बस गया अगेरे
फेर पिच्छां नहीं मुड़ेया—!

ओ छौरा !—
जो शिखिर दुपैहरै भखदे सूरज
मेच न साहडे आया
न उस छोह पैर असां दे
न मोढ़े हत्थ लाया—

छौरा—जो न ढलदे साए
साहथों होया लमेरा
न ओ साहडा हानी होया
न ओ रेया छुटेरा—
फेर वी पूरी कन्ध ते फिरेया
कच्ची, सिल्ली, पल्ली कन्ध ते

छौरा—डौरा—भौरा



ग़ज़ल

ह़ोंद नहीं जिसदी, ओहदी ह़ोंदों न छुटकारा पेया
बिन किसे वरतों ओहदा, हर थां ते वरतारा पेया ।

इक भुलेखा लाहुन नूं, किन्ने भुलेखे पा लए,
जापेया जीवें उम्र दा, इक काज, रच भारा पेया ।

इक निरे इख़लाक़ सदक़ा, लक्खां जज़्बे कोह लए
बिन किसे हत्या तों दिल दा नाम हत्यारा पेया ।

ला के सारी उम्र जिस इक मौत व्यापी उम्र बाद
केहड़ेयां वनजां च वेखो, अंत वंजारा पेया ।

न सुजाखे हो रहे, न अन्हेयां होनों बचे
किस दे ज़ंगाले होए दर्पण दा लश्कारा पेया ।

इक सांझीवालता दे बिन, न कुज वण्डेया गया
भासदा है सब नूं कि मंहगा एह बटवारा पेया ।

वाह ओए मत्तां देंदेया, मत्तीं नवेड़े होए नां,
अमलां दा निस्तार सी, सो खट्टे निस्तारा पेया ।

उस गली, गबरू किसे तों पब न चुक्के गए,
जिस गली मुटियार दी झांझर दा झनकारा पेया



गीत

अज घड़ा दे माहिया, चन्नें दी दौनीं
मुड़ ओ दौनीं माहिया, मैं कदें नहीं लौहनीं

सूरज नूं दे अरगा, मैं मत्थे लाओनी
लिश्के मिश्के चन्ना, मेरी हाड़ी सौनी

पावन रुत्तां गिद्दे नी मेरे आसे पासे
अम्बर दी एह लाली, मैनूं मले दंदासे

रंग सिन्धूरी संध्या, मैं मांग भरौनी
अज घड़ा दे माहिया, चन्ने दी दौनीं

खुश्बू फुल्लां दी रुत्ते मैंनूं लीड़े लेया दे
बिजली दा चूड़ा माहिया, मेरी बाहीं पादे

पैरीं मैं बद्दलां दी झांझर पौनीं
अज घड़ा दे माहिया, चन्ने दी दौनीं

साहां दे विच कस्तूरी हुन घोली जांवीं
शारा, रा रा, री री, हुन बोली जांवीं

घ्यो शक्कर होके आपा, हुन जिंद हंडौनी
अज घड़ा दे माहिया, चन्ने दी दौनी

काले बदलां दी धारी, कज्जल थां पौनीं
काशनी रंगी चुन्नी, अ्रज फेर रगौंनीं
हत्थीं ला के मैंहदी, मैं होर सजौनीं
अ्रज घड़ा दे माहिया, चन्ने दी दौनीं



तिन्न शेर

देखो-परखो, सोचो-समझो, होसी की अ्रखीर,
एस दौर विच निक्के वड्डे, खांदे वेच ज़मीर।

अ्रोस युगे दे किरती वेचन मेहनत सने शरीर
एस समय नूं सृजन हारे कंगले ते फक़ीर।

हर युग विच राम ते रावण, हर युग विच महावीर
हर युग है तगड़े माड़े दा, कीह होनां दिलगीर।

कविता

गई सरापी—फातिमा—मरियम अते सीता,
केहड़ा जुल्म नहीं हत्यारेयां कीता।

तोड़े मन्दिर, गुरुद्वारे, शिवाले अते मसीतां
मज़हबां दी लै आड़, पुगाईयां दूषित कलुषित नीतां
सत्त लुट लै ने पत्तां, रोलियां, मुट्ठियां गईयां प्रीतां
पाक पवित्र मूर्तियां नूं, कीता फीता फीता

गई सरापी—फातिमा—मरियम अते सीता।

ग्रस लैईयां राहू केतू ने सूरज दीआं शुआवां
फुट्ट पए जिस्मां चों लावे, सड़ बल गैईयां हवावां
मिद्धियां गईयां सुच्चियां कलियां, खिलरियां विच राहवां
भुक्खे बांधां रत्त जिन्हां दा, बूंद बूंद कर पीता

गई सरापी—फातिमा—मरियम अते सीता।

मरियम मां कुंवारी सद्दी, अन कीते दे पापों
बिलखी इक इक स्वास फातिमा, जाबर दे प्रतापों
आद कुवांरी रह गई वैश्नों, भैरों दे सन्तापों
कई अहिल्या सिल पत्थर ने, राम जन्म न लीता

गई सरापी—फातिमा—मरियम अते सीता।

इक हवस दा दैत्य जागेया लख लख देहां रून्नदा
शिवां न तीजा नेत्र खोलेया, जो नर मुण्डियां चुन्नदा
थम्म फट्टेया प्रहलाद दा, ना टुट्टेया गाण्डीव अर्जुन दा
बाईबल अते क़ुरान न छड़के, ना ही भड़की गीता

गई सरापी—फातिमा—मरियम अते सीता।

एह अन सम्भे भूत कहो यमदूत, समें दियां खा गए घड़ियां
भक्ख गए सब फसलां, कच्चियां पक्कियां, हीरे जड़ियां
चब्बे मोती हार, बिना अधिकार, तोड़ सेहरे दियां लड़ियां
कोई तूर न चानन होया, शिव ना ताण्डव कीता।

गई सरापी—फातिमा—मरियम अते सीता।



ज़माने दी तरक्की

किन्नी लोक तरक्की कर गए, कुज हाली वी ओहनां वक्खां
नायलून, टैरालीनां दे उप्पर, उग आइयां ने अक्खां

घुण्ड वाली नाजो दे नखरे, इक नखरे दा मुल्ल सी लक्खां
अज दी सारी पूद नास्तिक, कौन कहे साईं दियां रक्खां

शाला जीवें, खैरीं वस्सें, रब्ब दे पूजक देन असीसां
हुन हलवाहे चावां पीवन, हुन कित्थे चाटी दियां दक्खां

हुन कोई केहड़े पज्जीं रोवे, न धूआं ना गिल्ले गोटे
घर घर लग्गे गैस सैलण्डर, केहड़े बहाने मलनियां अक्खां

निम्मां, पिप्पल, तूत, धरेकां, एह छावां सन देह रसावां
हुन चलदे बिजली दे पक्खे, कित्थों सुच्चियां हवावां भक्खां

टेलीविज़न, फोन ते तारों, मेल मुलाकातां दे साधन
हुन क्यों बन्नेयों काग उडावां, हुन क्यों कुट्ट के चूरियां रक्खां

शूगर, क्यूब दी मिट्ठत सांवे, फिक्की जावे गुड़ दी भेली
गरी छुहारे हो गए हीने, हुन कीवें कोई शै शूं चक्खां

देवर ते भाभी दा रिश्ता, गूढ़ा सी बकरी चारन दा
मिलक सकीम दा डुब्बे बेड़ा, हुन मैं कीवें नाता रक्खां

चांदी सोने दे गहने सन, औखा वेला सारन जोगे
हुन सौखे वेले वी कच, कह रही तुट्टें थल्लीं मक्खां

अपनियां सोचां दे कीड़े, अंग अंग विच सरक रहे ने
कुरबल सिर जूआं दा भरेआ, कीवें पहलों निकलन तक्खां

चर्खा, झांझर, चूड़े, हर घर विच, संगीत सी किन्ना...
हुन भद्दे सुर रेडियो टेपां सब कुज मुट्ठा शुकर मनाए औत्तर वक्खा



जिन्हां ने मौत परनाई, मुहुर्त कद उन्हां फोले।
किसे ने जंज न चाढ़ी, किसे बद्धे नहीं सेहरे॥
'तारेयां भरे हुंगारे'

ਬਾਗ਼ੀ ਸ਼ਾਇਰ ਕ਼ਾਜ਼ੀ ਨਜ਼ਰ ਉਲ ਸਲਾਮ ਨੂੰ

सलाम

बोली लहू दी धार
गगन दे किन्ने तारे
धरत दे किन्ने ज़र्रे चट
होई रतनार ते लाखे रंगीं रंगी ।

किज हंजुआ दी रोहड़
बनी ए जोहड़
तरन लाशा दे फट्टे
सौ सौ फट्टीं फट्टे ।

फट्टे कीर कमज़ात
पता—किस देश ते केहड़े धर्म ते
केहड़ी ज़ात दे वट्टे
अट अट गए ने ताल, लहू दे नाल
जिन्हां तूं राहां लंघी,
सुत्ती घूक ए पौन
ओढ़ के कफन
है सिर पैरां तों नंगी ।

फिर ग्रन मंगे जैट
न झक्के टैंक ते, मच पए मिग
ते नच पए नैट्ट
मची इक आफत जंगी
जग गए याहिया खां
ओहनां दे जरनैल
विछे दे रह गए दस्तर खान
दिलां दी कबरीं रब्ब ग्ररमान
छोड़ हथियार खलोते ।

ग्रो ही सब हथियार
होए बेकार—
जिन्हां नाल कीते अत्याचार
संगीनीं बाल पिरोते
वगदी लहू दी धार
बड़ी गुलनार
केसरी रंगां रंगी
लिखे पेई ए संदेश
जिंदाबाद एह भारत देश
ग्रमारा सोनार बांगला देश ।



ग़ज़ल

जा, उमरे चुप कर के लंघ जा, मैं परतौनां नईं गा पासा,
स्थिर बृत्ति है भलिलए मेरी, मैं नहीं हुन्दी तोला मासा।

किस नाल मेरी सांझ रफाक़त, विच शरीकां मेरा वासा,
रास नहीं यारां दी यारी, बीत गेया जीवन बे रासा।

हुस्न दे चेहरे खिड़ेया डिट्ठा, हर पल खेड़ा हर पल हासा,
इश्क दे मत्थे सदा चमकदा, लिखेया दा इक हर्फ उदासा।

पानी नूं तरसावें साक़ी, उठ मयखानेयों सत्या नासा,
इस महफिल विच लहू वंडीनाएं, भर जाना ए मेरा क़ासा।

हुन केहड़े बदलां दी छैहबर, आई रोन मुकावन मेरे,
मैं जिस रुत्ते बीजे हासे, ओदों न क्यों लग्गा चौ मासा।

मेंनूं तिल तिल बुड्डेयां करदी, मौत आप बुडेया गई मेरी,
परत जवानी इस ते औनीं, इस गल्ल दा कीह भरवासा।

एह पिंजरा हुन खदरा खदरा, इस दे तीले कुड़कूं मुड़कूं,
हार एह चार देहाड़े चलसी, काहनूं कहके दें घरवासा।



वेत कांगी

कौन आ रिहा ए, धूएं दी वादी चों लंघदा
अग्गां दे दरिया नूं तरदा
लहूआं दे छप्पड़ विच नौंहदा—
पैर पैर अंगियार विछे दे
जेरे दे नाल मलदा—दलदा ।

झुलसियां झुलसियां पलकां विच्चों
अक्ख दी पुतली फेर वी निर्मल
जीवें सोना भठ्ठ पवे तां
हो जांदा ए होर बी उज्जल
घनी घिरी दी कालिख विच्चों
इक्को चेहरा झांक रिहा ए
रातां दी बुक्कल परता के
इक सवेरा झांक रिहा ए
ओ चेहरा अनखा दा आदी
होची मिन्ह दा बुत्त फौलादी ।

हृदय जिसदा पाक पवित्र
एह है डूंगा इक समुन्दर

कई अज़दहे इस दे अन्दर
कन्नां विच जहाज़ां दी छूकर
बम्बरां दी भ्यानक शूकर
फेर बी पर्दे कन्नां दे ने
दोवें इसदे सही सलामत
एह सुन्दा ए हिम्मत दियां बातां
एह करदा ए मेहनत दियां गल्लां
एह बिफरी दी नदी रोहड़वीं
विफरियां ने जिसदियां छल्लां ।

एह चांहुदा ए आज़ाद जिन्दगी
पर हत्यारे जिऊन नहीं देंदे
परीतां धोता सुच्चा पानी
चूठे लोकी पीन नहीं देंदे—

पर एह है पत्थर दा मानूं
कच्चां कोलों टुट्ट नहीं होनां
वट्टे नाल ठहकरे शीशा
फेर कहे मैं टुट्ट नहीं होना ।

ओ इक कंजक नंग मुनंगी
बम दी अग्नि साढ़ गई ए
उसदी सुथनी लूसी गई ए
झुलसी गई ए उसदी अंगी
धी किसे दी, बहिन किसे दी
चीक रही ए, विलक रही ए

अग्ग उसदे अंग झुलस गई ए
रूह उसदी ज़ख्मी हो गई ए—

मापे उस थों बिछुड़ गए ने
हानी उस थीं निखड़ गए ने
मुड़ वी उस हिम्मत नहीं हारी
कोई औख नहीं जापी भारी
एह शक्ति अगनी दी जाई
अग्ग जन्मां तों नाल लेयाई ।

ऐसे अग्ग तों चिखा बलेगी
सपन सड़न गे सब वैरी दे
आप ओ, मुटियार होवे गी
ओ दस्से गी पहुचां बाहरे ।
सूरज कौन डुबा सकदा ए
चढ़े चन्न, तां पुन्नेयां वाला
कौन भुलेखा पा सकदा ए ?

ओ इन्हां जाबर कुव्वतां ते
भेज रही है लख लख लानत
पर इन्हां नूं लानत व्यापे
एह नहीं उस मिट्टी दे पुतले
एह नहीं उस दीन दे लोकी
दीद जिन्हां नूं आ सकदी ए ।
देहरी उत्ते बलदा दीवा
केहड़े राह रुशना सकदा ए ?

ओ इक बाल अजांना आया
मोहडे ते बस्ता लटकाई
लटकी मटकी तुरदे उस ते
इक अगनी दी बरखा आई—
अचन चेत मासूम जहे ते
लख तबाहियां भुल्ल गईयां ने
खेडां नूं एह भुल्ल गया ए
खेडां इस नूं भूल्ल गईयां ने—

बस्ते विच किताबां है नहीं
पर फिकरां दे भरे ने पोथे
इसदी अकलों बाहरे थोथे
सुनन जोग नहीं, पढ़न जोग नहीं
न हुन किधरे घोलन जोगे
पर,
एह बालक वेतकांग दा
जो कंडियाली थोहर छांगदा
मोहडेयों बस्ता ला सुट्टे गा
मोहडे धर संगीन लवेगा
एह है अग्नि परिक्षा उस दी
जिसदे विच ओ सफल रहेगा।

गल मुण्डां दी माला पेई
अक्खां विच भविख सजाई
इस दा जेरा पर्बत जेडा
वेला इसदा आप सहाई।

एह सब वेत कांग दे लोकी,
इन्हां सिख लेया है जीना
मौत इन्हां नूं मार नहीं सकदी
कर सकदी नहीं, कदे वी हीना ।

एह अपनी मर्ज़ी दे मालक
अपनी आज़ादी दे खालिक
विच जाबरां रैंहदे पए ने
सर्दी गर्मी संहदे पए ने
एह सब कंवल दे फुलां वांगों
विच चिक्कड़ वी नहाते धोते
इन्हां दे सोन सवेरे चानन
सत्तां रंगां विच पिरोते
जिस भौईं हुन वास इन्हां दा
सदियां सदा—आज़ाद रहेगी

जिंदावाद ! वेतनामियो
दुनियां जिंदावाद कहेगी ।



गीत

हाड़ा ! बेईमाना ! ला झूठा लारा
इक वार तां कर दे जन्नत लेई इशारा।
हाड़ा बेईमाना...

रता हूंज के पा दे, नयनां दी गोदे
अम्बर दा झिलमिल करदा कोई तारा।
हाड़ा बेईमाना...

मेरी तली ते धर दे, इक हंजू खारा
हुजरे बैठन लेई, दस्स दे कोई ढ़ारा
हाड़ा बेईमाना...

जिंद हीर सलेटी, तू रांझन बन जा
वस जाए दिल दा, एह तख्त हज़ारा।
हाड़ा बेईमाना...

मैनूं कण्डे दे के, तैं सौखा हो जा
अते मैथों लै जा, फुल्लां दा खारा।
हाड़ा बेईमाना...

तेरी याद दी मूरत, रहे दिल दे अन्दर
मेरी देह बन जाए, इक ठाकुर द्वारा।
हाड़ा बेईमाना...

तैं मास दा लोभी, खा बोटी बोटी
हड्डियां दा चिन्न लै, इक मैहल मुनारा।
हाड़ा बेईमाना...

कुज घोल दे ज़ैहरां, पौनां दे साहीं
हो जाए मेरे, जिऊने दा चारा।
हाड़ा बेईमाना...

तेरा नाम सिमरदे 'माला' दे मनके
असां मंग लेग्रांदा, इक रब्ब उधारा।
हाड़ा बेईमाना...



ग़ज़ल

तारे बड़े उदास जहे ने, अक्ख बड़ी शर्मीली जेही ए
किस दा चेता आ के मुड़ेया, पैड़ बड़ी चमकीली जेही ए

फेर विछोड़ा साल गया ए, केसर काया पीली जेही ए
दिल दा शीशा टुट्ट के रैहसी, प्रीत बड़ी पथरीली जेही ए

सत्त रंगा इक रंग वटाया, होई बड़ी नबदीली जेही ए
अज हवा वी जम जाए गी. धुप्प बड़ी ठण्डरीली जेही ए

मिट्टत वी मौहरा कह त्यागे, उम्र बड़ी भरमीली जेही ए
मुक वैहसी, पर भुक नहीं सकदी, तबा बड़ी अनखीली जेही ए

देह विच विस घुलनों नहीं रैहनी, नज़र बड़ी ज़हरीली जेही ए
कड़की बिजली, पै के हटनी, लिश्क बड़ी भड़कीली जेही ए

नागन वस सपेरे हो गए, उल्टी बीन बजीली जेही ए
सूरज दे घर चानन है नहीं, रुत्त बड़ी अंधरीली जेही ए

सारेयां निघ्घों ठरदे जीवे, बिध माता गर्मीली जेही ए
क़िस्मत साहड़ो लिखने वाली, कलम बड़ी ज़र्दीली जेही ए

पीड़ां दी बुक्कल विच जम्मी, सांझ बड़ी ज़र्दीली जेही ए
काला सुब्बर ओढ़न वाली, रात बड़ी दर्दीली जेही ए

ओ चेहरा मुड़ भुल्ल न होया, दक्ख जिसदी जबरीली जेही ए
ओ सूरत फिर याद न आई, जिस दी चा गर्मीली जेही ए

तालू थीं मन दी तह तीकर, छोहन जोग न होंटां नाले
जीभ बड़ी कण्डीली जेही ए, सारी ही ज़ख्मीली जेही ए



कोई रात ग़म दी न मुक़दी कदे बी
जे चन्न तारेयां दे, हुँगारे न हुंदे ।

"सपनेयां दी माला"

आसां दे सब दीए बुझा दे

अंधकार है निर आसां दा
आसां दे सब दीए बुझा दे।

ओंसी ने अज राह नहीं दित्ता
काग बनेरे नहीं बोलेया
खब्बी अक्ख रता न फरकी
न ढाके ते घड़ा डोलेया
लगदा—राही राह पेया नहीं
आखन दे सब आहर मुकादे

अंधकार है निर आसां दा
आसां दे सब दीए बुझा दे।

सजरी बिधवा होई चांदनी
धरती अम्बर रोए सारे
पलकां ते जो आ गए हंजू
मुड़ अक्खियां दी गोद छुपा लए
चिखा बली चढ़दे सूरज दी
फूहड़ी पा बैठे ने तारे
पौन फिरे वरलाप करेंदी
रात दे सीने दर्द वसा दे

ग्रासां दे सब दीए बुझा दे
अंधकार है निर ग्रासां दा।

रात जिन्हां ग्रक्खिां चों लंघी
हुन ग्रोथों कीह दीहूं ने लंघना
रब्ब तों मेल दी घड़ी सरी ना

होर ग्रसां कीह ग्रोस तों मंगना
झूठी सी रांझे दी कहानी
ग्रज दी हीर नूं ग्राख सुना दे

अंधकार है निर ग्रासां दा
आसां दे सब दीए बुझा दे।

डाकिया वी ख़त नहीं ले ग्राया
गड्डी वी ग्रख़ीरी लंघी
कज्जी ढक्की जोगन मन दी

नच्ची हो के नंग मुनंगी
कुज ख्वाबां दी घढ़त ब्योंत दे
हसदे गल विच लीरे पा दे

ग्रासां दे सब दीप वुझा दे
अंधकार है निर ग्रासां बा।

उमर दी शाख़ ते भुल्ला पंछी
जे, कर बैठा रैन बसेरा
सार मुनेरे, उस उड जाना
परत कदे न पाना फेरा

जिंद दा बाग, न होना उसदा
न ओ कुज लगदा है तेरा
क्यों मन उसदी सुरत संभाले
भलेआं उसदी याद भुला दे

अंधकार है निर आसां दा
आसां दे सब दीए बुझा दे ।



जीहनूं जीवन दे विच, तलियां ते चुकनों लोक संगदे ने
ओही अज चढ़ के मोहडे, सारेयां दे जांवदा तकेया ए

'सपनेयां दी माला'

ग़ज़ल

ग्रग्नी ने ग्रग्नी दे सांवे, कर इकरार एह पक लेया,
हर रुत्ते मचनी ऐं ग्रग्नी, मंग उसने एह हक़ लेया।

जन्मां ने जद रातां तों लै के, डब्बी खोली लाली दी,
शामां ने फिर किस तों लै के, होंटां ते मल सक्क लेया।

सेजल जहे फुल्लां दा हासा, पानी पानी होवे नां,
अक्खियां चों डिगदा इक हंजू, पलकां ते मैं डक लेया।

हो गए कद स्थिर परछावें, कद उकरी तस्वीर रही,
शीशे नूं कर शीशे लागे, होया कीह जे तक लेया।

मुड़ त भाती मारे वेला, मुड़ न परते युग कोई,
गगनां दे सूरज ने रथ नूं, किस धरती वल धक्क लेया।

मुर्दे कर गए कबरां ख़ाली, जींऊदे होर वसावन लेई,
मौत ने लक्खां वारी जिऊ के, मरन दा रक्ख नक्क लेया।

मिट्टी दा इक भोगल पुतला, मरकज़ लक्खां रीझां दा,
छड्ड जाना ऐ जे सब कुज ऐथें, फेर क्यों मोहडे चक लेया।

□

डोली

जा चढ़ जा डोली लाडलिए ! सजनां लै डोला आए,
मां, प्यू, वीरे, भाभियां, भैनां विदा करावन आए ।

कूली गन्दल वागूं उसरी, विच बाबुल दे खेतां
गुड्डियां, पटोले खेडदी, समझीं घर गृहस्थी देयां भेतां
वज्ज दियां कन्नियां, लभ लेयाईं छान छान के रेतां
त्रिजनां दे विच पा पा घोपे, जिसनूं कतने आए
जा चढ़ जा डोली लाडलिए, सजनां लै डोला आए ।

इस बाग़े दी कोयल चल्ली, दूजे बागीं गावन
चल्ली चिड़ी इस अंगना दी, हुन नवां आल्हना पावन
इस मन्दिर दी सूरत चल्ली, मन्दिर नवां सजावन
खेनूं गुड्डियां दे के आखे, 'खेडन वीरे जाए'।
जा चढ़ जा डोली लाडलिए, सजनां लै डोला आए ।

लुग्गा कर वेहड़ा चल्ली, सुञ्ञां कर के त्रिजन
भाभियां भैनां नूं अज भुल्ले कुट्टन, पीसन, पिंजन
हरी भरी रहे एह डाली, पा अत्थरूं सिंजन
देन असीसां, कली असाडी, खिड़ेया फुल बन जाए,
जा चढ़ जा डोली लाडखिए, सजनां लै डोला आए ।

अमर वेल दे वागूं धीए, फुल्लीं अन्दरे बाहरे
सद भावां दी वलगन बलदी, चिन लेई मेहल मुनारे
उस कंध दी ढो ला के बैठन, प्रीतां दे हरकारे
तेरे मेहल दा चानन धीए, झौंपड़ियां रुशनाए,
जा चढ़ जा डोली लाडलिए, सजनां लै डोला आए।

सूई बनी रही नी लाडो, सीवें उधड़े लंगारे
तैथों, सौहरे घर दे लोकी, जावन सदक़े वारे
तूं लावीं गगनां पर तारी, पर न तोड़ीं तारे
हर सूरज दी पहली किरण, तेरे जीवन रच रच जाए
जा चढ़ जा डोली लाडलिए, सजनां लै डोला आए।

तूं बन के उस घर दी लक्ष्मी, सब तों लवीं असीसां
सस, सौहरा, देवर ते ननदां, वट्टन नहीं कसीसां
आंडी गवांडी नारां पेइयां, करन तेरियां रीसां
जिस थां बैठें, ओ थां तेरा, अपना घर सदाए,
जा चढ़ जा डोली लाडलिए, सजनां लै डोला आए।

जिस धरती ते पैर धरें, ओ धरती धन्न हो जाए
तैथों वांग मंथरा कोई न, अयोध्या पट्टी जाए
कैकेई दी ना रीस करीं जा दशरथ भण्डेया जाए
सरूप नखा दे वांगू, तैनूं कोई लांछन न लाए,
जा चड़ जा डोली लाडलिए, सजनां लै डोला आए।

दुर्योधन कोई, जीवन विच तेरा, अपमान करे न
भरी सभा विच द्रोपद वांगू, तेरा चीर हरे ना

कीचक दा लहू पीके, किधरे तेरा वर सरे ना
हठ तेरे तों मुड़ किधरे, महाभारत न छिड़ जाए,
जा चढ़ जा डोली लाडलिए, सजनां लै डोला आए।

धार कोई बहुरूप न रावण, मंगे तैथों भिक्षा
विच अशोक वाटिका कोई, दवे न उल्टी शिक्षा
राम कोई न लेनी चाहे, तेरीं अग्नि परीक्षा
किसे सुनैहरी मृग दा लालच, तैनुं न भरमाए,
जा चढ़ जा डोली लाडलिए, सजनां लै डोला आए।

सुच्ची बुरकी देवी जाईए, जे कोई हत्थ पसारे
अत्त सुचज्जता नाल समेटीं, जे कोई गन्द खलारे
बन जावीं झांसी दी रानी, जे कोई अनख वंगारे
नानक, गोबिंद, भक्त सिंह जहे पुत्त, तेरी कुख जाए,
जा चढ़ जा डोली लाडलिए, सजनां लै डोला आए।

इश्क़ पेचे दे वांगू लाडो, पावीं प्यार पलेचे
निक्के वड्डे, आपो जेड़े, रखीं सारे मेचे
परिवार तेरे दा कोई जी, अनख आन न वेचे
जंगां दे विच पलन किते न, तेरे लव कुश जाए,
जा चढ़ जा डोली लाडलिए, सजनां लै डोला आए।

भाभियां सदा सुहागनां लोचीं, वीरां दी सुख मंगे
निम्मां निम्मां हासा हासे, कदी न उच्चा खंगे
भैनां दी जापे परछाईं, बाबुल कोलों मंगे
पतझड़ विच वी इसदी होंदो, खेड़ा खिड़ खिड़ जाए,
जा चढ़ जा डोली लाडलिए, सजनां लै डोला आए।

पैर पैर ते होंवन धीए तैनूं हत्थीं छांवां,
सेक कदे न भासे तैनूं, मानें ठण्डियां हवावां
पलकां दे नाल सोतन हेती, नित्त तेरे लेई राहवां
जा चढ़ जा डोली लाडलिए, सजनां लै डोला आए।

सत्त पदार्थ वेख के थाली, चित्त अहंकार न लेयावीं
रुक्खी सुक्की खा के धीए, लख लख शुकर मनावीं
शरमां धरमां दे बिच रह के, अपनी उमर बितावीं
सद गृहस्थी, सद नारी दी, सारा जग महिमां गाए,
जा चढ़ जा डोली लाडलिए, सजनां लै डोला आए।



मधुर बंसी

जद पाप दी बदली छांदी ए, ते ज़ुल्म दी हनेरी चलदी ए
उस समें मधुर बंसी मेरी, बरछी दा रूप बदलदी ए।

जद बहारां विच नहीं फुल्ल खिड़दे सावन विच सोका हुंदा ए
जद पश्चिमों सूरज चढ़दा ए, पूरब वल आन घरोंदा ए
जद पाप दी तकड़ी नियूं जावे, ते पुन्न दी तोल न रलदी ए
उस समें मधुर बंसी मेरी, बरछी दा रूप बदलदी ए।

जद जियुंदियां नूं दे दे फाके, कंकाल बनाए जांदे ने
ते मुरदेयां दे गल पा हीरे, कबरीं दफनाए जांदे ने
जद ठण्डक हत्थ मुआ़ता दे, आंगस नूं आंगस छलदी ए
उस समय मधुर बंसी मेरी, बरछी दा रूप बदलदी ए।

जां साहां दे विच पए ज़हर घुल्लन ते लहू विच कीड़े बुलकन
जद मासूमां दी हत्या लेई, कंसां दे पटड़े कुलकुन
जद हाहाकार मची होवे, हर संघ चों कूक निकलदी ए
उस समें मधुर बंसी मेरी, बरछी दा रूप बदलदी ए।

जद दो भाईयां दी शत्रुता बन, मगरे हाथी वी न मरे
जद यार सुदामां दा असासा, किसे कृष्ण दी होंदों वी न सरे

जद रुकमणी प्यार दे कर होले श्री कृष्ण दी भाल संभलदी ए
उस समें मधुर बंसी मेरी, बरछी दा रूप बदलदी ए।

जद अभिमन्यु जहे योधा लेई, कोई चक्रव्युह रचांदा ए
जद भरी सभा बिच द्रौपद नूं, कोई नग्न करन आ जांदा ए
जद पूतना दाई जही नारी, अनजान दे प्राण ही सलदी ए
उस समें मधुर बंसी मेरी, बरछी दा रूप बदलदी ए।

जद अम्बर कैहर कमांदा ए, ते जल थल कर विखलांदा ए
अते कृष्ण कोई न हो अगेरे, चीची ते गोवर्धन चांदा ए
जद यमुना दे निर्मल जल, किसे नाग दी बिस घलदी ए
उस समें मधुर वंसी मेरी, वरछी दा रूप ददलदी ए।

जद इक इक ते सौ भारी, माड़े नाल जाबर भिड़दा ए
जद खा के तानें नारी दे, सगवां महा भारत छिड़दा ए
जद अर्जुन दे रथ दा पहिया, कोई होनी आ के वलदी ए
उस समें मधुर बंसी मेरी, बरछी दा रूप बदलदी ए।

जद ब्योंत समाजां धर्मां दी, अत्याचारां विच ढलदी ए
जद उच्च अटारी दी बुरजी, झौंपड़ दियां धुप्पां मली दी ए
जद हंजू किरदे होंटों, हासे दी पपड़ी गलदी ए
उस समय मधुर बंसी मेरी, बरछी दा रूप बदलदी ए।

जद नग्नतावाद दे कुज हामी, सखियां नुं खुल दवांदे ने
जद कृष्ण नहीं कादम्बी बैह, चुक चुक लीड़े लै जांदे ने
जद राधा, मीरां, सत्य भामां ते लूंजां दी रौ मचलदी ए
उस समे मधुर बसी मेरी, बरछी दा रूप बदलदी ए।

जद स्वासां दी नहीं तन्द रलदी, होंटां तों नहीं फुल्ल किरदे
जद पोटे हम्ब जांदे ने, 'माला' दे मनके नहीं फिरदे
उस समें मधुर बंसी दी लय, साहां दे सुर संग रलदी ए
उस समें मधुर बंसी मेरी, बरसी दा रूप बदलदी ए।



क्यूं पैर थिड़कदे पए, क्यों तन दी होश नहीं
हाल्हे ते शाम होई नहीं, साए नहीं ढले ।

'अम्बर चुप रिहा'

गीत

मैंनूं तेरे इशारेयां ने पट्टेया
चन्नां ! नित्त देश्रां लारेयां ने पट्टेया ।

तूं पट्टदों तां गल्ल बन जांदी
तेरे लोकां नकारेयां ने पट्टेया ।

होरनां नूं हनेरेयां ने पट्टेया
मनूं चन्न तारेयां ने पट्टेया ।

कुज पट्टेया तेरी चुप चुप ने
कुज बोलां करारेयां ने पट्टेया ।

अक्ख ने, दिल ने, जिस्म ने रूह ने
रल मिल के सारेयां ने पट्टेया ।

ठर ठर मेरे तिहाए अथरूं
अग्ग दे अगारेयां ने पट्टेया ।

जपी जिस जा तेरे नाम दी 'माला'
ओहना ठाकुर द्वारेयां ने पट्टेया ।



ग़ज़ल

दिल ग़म ने सल्ले, कोई कर लौ चारे
असीं हुन टुर चल्ले, कोई कर लौ चारे।

पीड़ां ते चोबां, कसकां ते हन्जू
साहडे पए गए पल्ले, कोई कर लौ चारे।

सब झड़ पए तारे, अम्बर दी बुकलों
तक्क सूरज वल्ले, कोई कर लौ चारे।

अज़लां दी नींदर असी सौना चाहिए,
किते पत्त न हल्ले, कोई कर लौ चारे।

एह जिंद जलांदे, एह् मार मुकांदे,
धूएं दे छल्ले, कोई कर लौ चारे।

कदी हस्स के रोइए, कदी रो के हस्सिए
असीं हो गए झल्ले, कोई कर लौ चारे।

उमरां दे राही, मोड़ां तों बिछुड़े
हुन रह गए कल्ले, कोई कर लौ चारे।

किस उमरों लंघिए, जिंद सिल्ली लै के
राह हंजुआं ने मल्ले, कोई कर लौ चारे।

शीशे दी नगरी, पत्थरां दे बन्दे,
एह किस ने घल्ले, कोई कर लौ चारे।

सोचां दियां कांगां, गैबां दियां डलियां,
मुड़ वैहन न ठल्ले, कोई कर लौ चारे।

सब उड्डने पखरू, खम्ब छड्ड खलोंते,
गए धरती तल्ले, कोई कर लौ चारे।



तन दे पिंजरे क़ैद नहीं रैंहदी ए रूह
उडदे पखरू तां मुड़ मिलदी नहीं सूह
इंज लहू पानी दा सागर सुकदा ए
जीवें अपने आप ही खुट्ट जांदे ने खूह

'तारेयां भरे हुँगारे'

मोती

देही दा कोठा लिम्बेया, गारे मिट्टियां ला
इक रुत्त बदलाखड़ी, गारे गई रुढ़ा।
सूरज पुच्छे धरतिए, तैं नहीं आखा सेक
धरती हस के आखदी, मैं कद तेरी टेक।
थम्म सम्मेयां इक क्षण लेई, मिन्न लां तेरी पैड़
उस पैड़े पर मैं टुरां, कोई न कड्डे कैंड़।
परेयों लंघ जवानिएं, लावीं न कोई दाग़
दुद्ध ज़म्मे दही हो रहे, जेकर लाईए जाग।
चन्दन दे उस रुख ते, कदों पखेरू बैहन
किस कारी ओ वाशना, नाग पलम्मे रैहन।
लक्खां सूरज लिश्कदे, तारे चढ़न बहुतेर
खिलरे चन्न दी चाननी, मिटे न मन दा हनेर।
पलकां दी सूली चढ़े, अत्थरू लक्ख हज़ार
कोई सदेया मन्सूर नहीं, जन्मां सौ सौ वार।
पर्बत नहीं सी चानना, कोई नहीं फुट्टा नूर
मूसा दा एह वैहम सी, बलदा डिट्ठा तूर।
नीं रुत्ते मस्तानिएं, हुन तां रंग वटा
पीले हत्थ कर मैंडढ़े, मौली मेंहदी ला।
वेदी बैठ उडीकदे, पैहर बिताए चार
न शौह सेहरे वालड़ा, न डोली न कहार।

पए कलीरे छनकदे, गान्नें खोले कौन
कोलों जंजां लंघियां, नीवीं कर कर धौन।
मिट्ठे केहड़े बाग दे खट्टे कर गए दन्द,
दंदां दे नाल चागियां, करदे रहे मकरंद।
वाह नी उमरे शोहदिए ! कीह रम्भेया ई काज
न पच्छी विच पूनियां, नहीं पटारी दाज।
बिन कक्खां दा आल्हनां, कद मानन दे जोग
विच अन जन्में बोट ने, किस लेई लेओनी चोग।
दो नदियां दो नैन ने, मेले नाल संजोग
मन नूं डोबू आंवदे, मिलना किस बिध होग।
हिस्से विच अनमोल दे चोग रली दी रेत
न टांडे, न सिटड़े, न हाली न खेत।
पौनां दी रुत्त चूस के, हुन्दे सांवें रुक्ख
लक्खां सोके सांभदी, हरियावल दी कुक्ख।
करमों वे अन करमेओं, करो न मेरो मेर
मैं तकिया इक सब्र दा, मैं लई कर्म बहुतेर।
जोकां दे मुंह मोकले, फोड़े भरे मवाद
ला डीकां लहू चूसेया, हुन न मौली व्याद।
एह शतरंजी चाल है, पल पल मचे फसाद
किज दौड़ां ने सांझियां, फीलेयां नाल प्याद।
रब्बा वे ! अन डिट्ठेया, डिट्ठी तेरी होंद
होंद दे सदक़े पै गया, होंदे होंदे रोंद।



मेरी बेटी अन्नां

इक सुनक्खी सोहनी सूरत
सूरत दे विच मेरी सूरत।

ओ जीवें चन्दन दी काया
उस काया विच मेरी छाया।

अल्हड़ सोहल जवानी उस दी
अक्ख अजब मस्तानी उस दी।

गोरा रंग गुलाबी बुल्लियां
धुप्पां ज्यूं फुल्लां नाल तुलियां

वालां विच घुंघरालियां वैहरां
ज्यूं गंगा दियां सुच्चियां लैहरां

अक्खां जल दे भरे कटोरे
वज़ू करन लेई कूज़े कोरे

पैरीं पा तिल्ले दी जुत्ती
तुरे तां, जापे धरती सुत्ती

तुरदी आवे मटकां लै लै
गल्लां करदी लटकां लै लै

गुस्से नाल भख पेया चेहरा
चेहरे पर शरमां दा सेहरा

हस्से ऐसा खुल्ला हासा
जीवें क़यामत परते पासा।

धारे भेस जद भुस्सेया भुस्सेया
तां जापे जीवें रब्ब रुस्सेया

देह जीवें केसर दी क्यारी
महक रही सारी दी सारी

घर विच रौनक लांदी रैंहदी
ढोलक दे पर गांदी रैंहदी

बस्ते बिच किताबां भर के
बस्ते नूं मोहडे ते धर के

रोटी बन्न के पूने पल्ले
तुर जांदी ए स्कूले वल्ले

अपनेयां नाल दावेओं लड़दी
गैरां तों पाई नहीं फड़दी

बड़ी लड़ाकी, बड़ी प्यारी
एह मेरी फुल्लां दी खारी

कोयल एह मेरे बाग़ां दी
रेखा एह मेरे भागा दी
एह मेरे जीवन दी बीणा
रेखा ! एह मेरे भागां दी

एह मेरी उमरां दी बाती
एह मेरी अक्खां दी जोती
एह मेरे साहां दी तंदड़ी
एह मेरे नैनां दा मोती

एह मेरे मन्दिर दी मूरत
एह मेरे प्यार दा शिवाला

एह है, मेरी अंजना अंजुम
एह 'माला' दी विजया माला

□

बड़े युग आ के पलटे ने अज कुज होर पलटन गे
एह कुख सदियां दी सांभे गी अंगियार हाले वी

'तारेयां भरे हुंगारे'

रब्ब नूं प्रोत्साहन

ऊंठां तों बोते जबर, रब्ब तों बन्दे तेज
चेले सेजां वालड़े, गुरु भए निस तेज
चांदी दी पलंगेरड़ी, सोने मढ़ती सेज
बंदी कर रब्ब बहा लेया साहड़ के थोथे हेज

हर कोई मांगत वेखेया, वड्डा मांगत रब्ब
रात दिनें पए पांवदे, उस नूं भिखेया सब
कीह चढ़दियां चड़तलां तकदे चुक के पब
उसदा खट्टेया ठग एह. ठग ठग बैंहदे दब

तैनूं लुट लुट खांवदे, तूं भोला नादान
निरा ही उल्लू काठ दा जिस विच नहीं गी जान
बन्दे नूं गुस्सा चढ़े, ओ नहीं हुन्दा मान
तूं अपने लेई हीनेयां ला नहीं सकदा तरान

तूं बंदेयां दे रैहन नूं केहड़ी रची सरां
तेरे लेई बंदेयां रचे मन्दिर क्यों हर थां
मन्दिर दे विच बैह गेयों लै के वड्डा नां
ऐन्नां कदी न सोचेया मैं वी बंदा हां ?

होरां दे घर शादियां तेरे घर विच सोग
तेरे सांवे रो रहे सारे अपने रोग
तैनूं तां भुक्ख है नहीं फेर वी लग्गे भोग
थाल ही परता सकें तूं नहीं ऐनें जोग

सौन नूं तेरा जी करे पर एह खड़कन टल्ल
भनदा रहो तूं आकड़ां खांदा रहा कड़वल्ल
जां थम्म घड़ियौल दे रता तां थाओं हल्ल
जां इन्हां झूठे पूजकां दा सीना ही दे सल्ल

भई सुर दी आरती खा लै तेरे कन्न
गुंगे वी पए गांवदे धोखे दे रहे हन
कन्नां तों आदी होयों, हत्थां तां चलदे सन
इक मन्दिर दा सीखचा तूं नहीं सकेया भन्न

पोह दी रुत्ते देन पए पल पल मगरों स्नान
ठुरूं ठुरूं नित्त हो रहे तेरे नैन प्राण
पाप तेरे ते चढ़ रहे ओ पए पुन्य कमान
तेरे चरणामृत वजहों औ पए शराब चढ़ान

अत्त फुल्लां दी वाशना सड़ेया तेरा नक्क
हारां दे भारों लिफी धौन वी पैरां तक
सदियां तों खलेया होया गया नहीं तूं थक
खले खले दा थक के अजें नहीं टुट्टा लक

तेरे सिर चढ़ बोलदे एह सराधां दे कां
कौडी दे मुल बिक रिहा थां थां तेरा नां

तेरे नाओं उजड़े वसदे पिण्ड गरां
लोकी कंगले हो गए तूं एह सोचें तां

तेरे नां तों खा रहे बोदियां वाले मंग
रंग सियारां चातरां तैनूं लीता ए रंग
हर इक रंग च पांवदे तेरे रंगों भंग
दाता सैं मंगतां भेयों ग्राई नहीं ऊं संग

घर नहीं दाना खान नूं ग्रम्मा गई दी पीन
तैनूं रत्त प्यालदे आपे पल पल थीन
तेरे पण्डित पुरोहित सब नूं कर गए हीन
तेरे चढ़ावे लाज़मीं आप हवा फक जीन

तेरा खा ग्रफरांवदे खट्टे लैन डकार
धन वाले दी हो रही मन्दिर विच जयकार
कंगले नूं तेरे दरों देंदे ने दुत्कार
मरने परने तूं बिके दें न इक फटकार

कीह कीह तैथों मंगदे अग्गों हां न हूँ
दब्बे दित्ते मुंह तेरे कन्नीं भरेया रूं
ढोलक, छैनें, कीर्तन बोल सकें न तूं
मील दा वट्टा गड्डेया जिस नहीं करनी चूं

मच्छ मच्छियां नूं खा गए चले सृष्टि फेर
तेरे सदके हो रहे ग्रत्याचार बहुतेर
पत्थर दे डेले तेरे सकें न हंजू केर
बंदी ने किज बौढ़ना सुन ग्रबला दी टेर

बदला ही धोखे दा एह तुट्टा ई जो कैहर
अपने भक्तां नाल तूं सदा ही रखेया वैर
तेरे सांवे बैठ के मीरां पी गई ज़ैहर
तूं नहीं उस नूं वरजेया तूं आखेया ठहर

दर दर दे टुक खांदेयां भृष्ट है तेरी बुद्ध
उस की सौर संवारनी जिस न अपनी सुद्ध
बन अर्जुन दा सारथी कीता नीती विरुद्ध
होया तेरी चुक्क ते महाभारत दा युद्ध

तूं करदा ही आ रिहा सब थां बदियां आप
कामी कीते जीव सब आप सदा निष्काम
लंका कीती नाश तूं नाम धरा के राम
राम राम उस नाम नूं राम नाम बदनाम

सोच सोच तेरे लेई अपना पुट्टेया निष्ट
मैं तैनूं कीह आखनां मेरा तां तूं इष्ट
भैड़े नीतां वालड़े मन्दिर करदे भिष्ट
नस्स चल ऐथों भोलेया नस्स तोली इष्ट



ग़ज़ल

दो पल रंगीन सन जीवन दे, जो अत्त भार गुज़रे ने
कि मैनूं भर के नज़रां वेखदे, अज यार गुज़रे ने

पता नहीं सी चुप तकनी इच, इतनी तांग हुन्दी ए
तजरुबे मेरे दे एह क्षण तां पहली वार गुज़रे ने

हमेशा जितदे रहे दिल दी बाज़ी नूं जेहड़े जेतूं
ओ नैनां दी बसातों उमर सारी हार गुज़रे ने

परख नहीं प्यार दी कीती, न नफरत आज़माई ए
बड़े सन कार दे दिन ओ, बड़े बेकार गुज़रे ने

किते साक़ी दा फैज़-ए-आम, तां होया नहीं यारो
बड़े ही लड़खड़ांदे, अज वादाख्वार गुजरे ने

ओ इक सादी जही सूरत, जीवें मरयिम दा बुत्त कोई
अजहे बुत्त तों नछावर हो के, सब श्रृंगार गुज़रे ने

जुदाइयां दे ने औखे साह, जो गिनती विच न आवन
ते साह मिलनी दे गिनवें जहे, कदे दो-चार गुज़रे ने

जो सब नूं डोब के आपे रहे लगदे किनारे ते
किनारे तों ओ थिड़के ने, ग़ोता मार गुज़रे ने

जो डिग्गे बिज्ज* नयनां दी, फना अल्ला करे दिल नूं
एह दिल नैनां दे हत्थों, तां खांदे मार गुज़रे ने



नेकी वदी दी 'माला' नहीं मुख्तार मालिका
तूं आप ही है कर्त्ता, ते आपे करंत वी ।

'तारेयां भरे हुंगारे'

---

*बिजली ।

जंगी तराना

□

वद्ध सेनानी होर अगेरे
संग तेरे सैनिक बहूतेरे ।
वद्ध सैनानी होर अगेरे !

अपनेओं लागेओं लंगन देवीं, कदी न तत्तियां हवावां
अट्टन देवीं न धूड़ां नाल, सीमा दियां दिशावां
ठण्डियां ठार न होवन देवीं, सूरज दियां शुआंवां
कालख कालख होन न देवीं, अपने सोन सवेरे

वद्ध सेनानी होर अगेरे !

मुक्कन देई न मां दी लोरी, न बालां दे हासे
मुक्कन देईं न भंगड़े, गिद्दे, त्तीयां खेल तमासे
उजड़न देईं न हाड़ी सौंनी, मुक न जान चोमासे
झण्डे गड्डु अगेरे हो के, परखन लेई वैरी दे जेरे

वद्ध सेनानी होर अगेरे !

इस धरती दे इक वी कण ते, होनी पंर धरे नां
इस अम्बर दे तारे तोड़न दा कोई जतन करे नां

इस चन्द्रमां ते कोई भैड़ी, अक्ख दा वार सरे नां
चित्तर सकन न भैड़े खाके, समें दे बुरे चतेरे

वद्ध सेनानी होर अगेरे !

मुड़ सीता दे हरण लेई, एह रावण कर न जेरे
भूत मुसोलीनी, हिटलर दे, पए पान न मुड़ के फेरे
ऐस वतन दे खेड़े ते पतझड़ न लावन डेरे
खोह लै एह जादू दी वीणा, परां नूं चक्क सपेरे

वद्ध सेनानी होर अगेरे !



सिखदे रहे हमेशा, जिऊने दे ही तरीक़े
पर भुल्ल-भुला गए ने, मरने दे वी सलीक़े
'तारेयां भरे हुंगारे'

चोला

चोला होया पुराना इस नूं बदल देओ
हुन एह नहीं होर हंडाना इस नूं बदल देओ।

इस चोले दा दक्ख रिहा नहीं
इस विच हुन कक्ख रिहा नहीं
किज हून ढोक ढुकाना
इस नूं बदल देओ।

इस दा रंग पै गया फिक्का
हुन कीह इसदा लट लट्का
मुड़ नेईं रंगेया जाना
इस नूं बदल देओ।

इस चोले दे लक्खां भेती
भेत ने इसदे ऐसे सेती
भण्डेयां गया नमाना
इस नूं बदल देओ।

इस हंडना नहीं टाकियां नाले
इस ढुक्कना नहीं बाकियां नाले
इस दा गया ज़माना
इस नूं बदल देओ।

इस चोले च नाग पंज ने
पंज तत्त विच दाग पंज ने
डंगदा ए उड-पुड जाना
इस नूं बदल देओ ।

रज्ज हंडाया हुन कीह रजना ऐं
हुन इसदा कीह काजा कजना ऐं
हुन मैं नवां सवांना
इस नूं बदल देओ ।

नहीं एह सुच्चा, नहीं ए जूठा
दान करां कीह मैं एह लूठा
मेच किसे नहीं आना
इस नूं बदल देओ ।

इस चोले दे चोर कई ने
चोरां दे नाल, होर कई ने
गुम्मेयां फेर पछताना
इस नूं बदल देओ ।



रुमकिए पौने

रुमकिए पौने निरोइए, पैरीं झांझर छनकदे
लंघदी करदी होई सरगोशियां
हसदी जीवें थाल कैं दे ठनकदे ।

छोह के फुल्लां नाल, महकां अपने पल्ले बन्नदी
हर किसे सड़ांध नूं खुश्बूआं हेठ लुकौन लेई
खल के पब्बां दे भार
बातां अपने मोहडे चक्कदीं
हर दिले दा भार हौला करन लेई
गुम चुप
खामोशियां बिच हुंगारा भरन लेई ।

ओ हुंगारा
जो किसे प्रेमी तों न भरेया गया
ओ हुंगारा—जिस विच हौके रच गए
हौकेयां दी बात, इक लम्मी कहानी हो गई
इस कहानी दे बड़े—
बड्डे आलोचक जम्म पए
दससदे :—
जद वी कदें बचपन—जवानी कर गई
फरकदे बुल्लां दे कुज इक़रार भूठे पै गए

छलकदे नयना दे हंजू हो गए घसमंलड़े
डिग के मटमैले जहे हत्थां ते
जूठे हो गए—
जूठेयां हत्थां दे तुपके
जीभ ते चक्खे जदों
साहां ने अंगियार जहे भक्खे तदों
रच के स्वासां विच, हां इक़रार है पलदा पेया
बन के लहू दा वैहन
इक इक नाड़ विच चलदा पेया।

लहू दी इक हवाड़ है सम्भदी पेई
हवा दे बुल्ले वांग वगदी
वग के फिर थमदी पेई
हसदी :—

ज्यूं थाल कैं दे ठनकदे
लंघदी करदी होई सरगोशियां
पैरीं झांझर छनकदे
नी रुभकिए पौने निरोइए !!!



ग़ज़ल

दूर हट चंडाल वृतिए, परेर नां मरने लेई
कार कुज बाकी अजें ने, उमर दे करने लेई ।

दिस्स रही पूर्ब दी गुट्ठे, माड़ी माड़ी पीलतन
लहू लोड़ींदा है अजें, विच लाल रंग भरने लेई ।

कूक ते फरियाद, इक हासा तमाशा हो गई
जीभ दंदां हेठ रखिए, पीड़ दे जरने लेई ।

हनेरियां आकाश मल्ले, व्यापियां ने कालखां
चाननी नूं थां नहीं, धरती ते पब धरने लेई ।

पिछलेयां छल्लां नूं लंघ के तर, नहीं निश्चित हो
होर बी तूफान अगेरे ने, तेरे तरने लेई ।

फिर रही ब्राह्मड विच कैसी सरापी रूह कोई
हर नक्षत्र विलकेया है, ऐस दे परने लेई ।

युद्ध महाभारत दा, ते उपदेश गीता दा बड़ा
फेर वी विछदी है बाज़ी, द्रौपदा हरने लेई ।



पानी—दो देशां दा

पानी पानी सब जिंद होई सारी जिंद समोता पानी
सिर उप्परों जद लंघेया पानी पैरो पैर घरोता पानी

मेरे बूहश्रों टुरेया पानी तेरे द्वार खलोता पानी
मैं बुक्क भर मत्थे नाल लाया तेरे पैरीं छोता पानी

दर्द भरे अक्खां दे पानी हमदर्दी नाल पी लै सारे
मेरे नयनों सिम्मेया पानी तेरे नयना धोता पानी

वगदा रेंहदा अपनी चाले अक्खां मीटी, मंज़िल वल्ले
की जानां ? केहड़े बेदर्दी कोल्हू दे विच जोता पानी

तुपका तुपका परसा हो के पानी आया मेरे मत्थे
मैं चेहरे दी धूड़ रला के नयनां बिच संजोता पानी

——

तेरी सोहनी, मेरी सोहनी डुब्बी विच झनां दे नहोनी
महीवाल दा इक परछावां पल न डक खलोता पानी

पानी दे कण्डे बैंह के करिए मिलनी दियां गुज्झियां बातां
क़ासिद बन, आ गए सुनेहवें बातां नाल भिगोता पानी

जमदा जावे मरदा जावे फेर वी न मुक्कन विच आवे
आशिक वांगू फिरे बांवरा किस सूरत ने मोहता पानी

पंज दरियांवां दा ओ झेडा अज़ नजिट्ठ न होया साथों
किस तसवीह ते किस माला दे मनकेयां विच पिरोता पानी

—

पानी वी बन बैठा मिर्जा लैहरां दी वग्घी लै उडेया
जिस कीता इग़वा साहिबां दा ओ नहीं कितों फड़ोता पानी

बचपन दा दित्ता संदेशा पिछली उमरे पुजेया तैनूं
खवरे केहड़ी लहर गले ला मार गया सी गोता पानी

—

सोहनी नूं अफरा गया पानी सस्सी नूं तरसा गया पानी
शीरीं नूं टपला गया पानी किन्ने रंग रंगोता पानी।

—

मैं यादां दे रेते दी मुठ बन्नी ऐस झनां दे पल्ले
मेरे देसों, तेरे देसीं जांदा नहीं बसोता पानी।



कविता

बाहे दे सिर अट गए, मिट्टी घट्टे नाल
नाल पछांते राहियां, टुरे सी बाह के बाल

बाल बाल दुखदा पेया, टुर टुर विंगी चाल
चाल कुवेले दी चली, कर गई हाल बेहाल

हाल बेहाल करने, न कोई जवाब सवाल
सवाल दी कुख्खों जन्मेया, हर महीना साल

साल साल के उमर नूं, सल्ल गए सल्लां नाल
नाल लहू दे बुर्कियां, पानी विच हंगाल

हंगाल के हत्थ वधाया, पानी दा जंगाल
जंगाले दे अत्थरूं, अखियां दा खंगाल

खंगाल के दीदे वेखेया, कोल खड़े चंडाल
चंडालां वस्स पै गए, समें दे तिन्नें काल

काल कीलियां हो रहे, भलेयां तूं सम काल
समकाली रुचियां नहीं, रुचियां दी अड्ड चाल

भाल भलोकी भोलड़ी, रली अजोकी नाल
नाल नाल नच्चे किवें, खुंज के पैरों ताल

ताल ताल ते खुंज के, खुंजी उम्र भयाल
भयाल न फट्टे दा कोई, टुर इकला हर हाल

हर हाले जिऊन लेई विंगी सिद्धी चाल
चाल बेहाला कर गई, शरमां दा नंगाल



समां बन छलावा, ते पाऊंदा भुलेखे
बड़ा बोलदा ऐ काग, साहड़े बनेरे

'तारेयां भरे हुंगारे'

गुरु नानक देव जी

चानन तों रिश्मां फुट्टियां ने, सूरज ने किरणां सुट्टियां ने
पौनां ने चंवर झुलाई ए, धरती ते इक लशकार पेया ।

त्रिपता दे नैनां दी तृप्ति, चानन कालू दे मन दा ऐ
तलवंडी नूं लग भाग रहे, होंदा जय जय कार पेया ।

बाला मर्दाना नाल लेई, हत्थ रब्बी इक रूबाब फड़ी
साझां दे गौंदा गीत पेया, सदके हुंदा संसार पेया ।

वेहलड़ दे पूड़े त्याग दवे, किरती दी रोटी छक लैंदा
सत्कारे हर इक कामें नूं, फटकारे कुल ज़रदार पेया ।

काशी, मक्के विच इक रब्ब ए, दस्सेयां ए पण्डित मुल्लां नू
समता दे राग अलाप रिहा हर दिल विच हो वरतार रिहा ।

जाबर देश्रां जबरां सत्तेया, अति मार दी कुरलाहटों अक्केया
दस्स तैं कीह दर्द नहीं आया, रोंदा ते कर पुकार रिहा

नीचां नूं मिल गल वकड़ी पा, हीने नूं चुक सीन नाल ला
इक ओंकार विच रम्मेया दा, करदा ऐहो प्रचार रिहा ।

वंजारा सुच्चियां वनजां दा, कर 'तेरा तेरा' तोल धरे
सज्जन डाकू नूं कर सज्जन, करदा कैसा उपकार रिहा।

हनेरां विच चानन बन लिश्के, सोके विच बद्दल बन बरसे
दिहूँ च वट जावन रातां वी, बंजरां च खिड़ गुलज़ार रिहा।

गुरु ग्रन्थ रचियता गुरु नानक, जिदी नाम ख़ुमारी उतरे नाँ
जो नानक नाम जहाज़ चढ़े, करदा भव सागर पार रिहा।

नैनां विच हंजू लोकां दे, सीने विच दर्द ज़माने दा
स्वासां दी 'माला' दा हर मनका जपदा इक सत्त करतार रिहा



ग़ज़ल

समें धारेया मौन कुवेले कौन आ गया
तरेलां दे बिच नहौन इस्सेले कौन आ गया

किस नूं पुच्छे कौन, अजेले कौन आ गया
उच्ची कर के धौन, परेले कौन आ गया

हंजू बन मन्सूर चढ़े पलकां दी सूली
मेहकां दे विच सौन रवेले कौन आ गया

चन्न दी गोदे सूरज, छपेया पहली वेरी
ढूंढे वगदी पौन, पिछेले कौन आ गया

धरती मारी झात छुटेरा गगन हो गया
रुत्तां नूं समझौन, सूवेले कौन आ गया

रात समेटे जादू टुर गई चुप चपीती
तारे लग पए झौन, मझेले कौन आ गया

बागां विच बहारां, चढ़ियां उढ़न खटोले
फुल्लां नूं परचौन, वचेले कौन आ गया

मुड़ के गुज्जी चूरी सुर वंझली ने छेड़े
हीरां-रांझे गौन एह बेले कौन आ गया।

लग मुखौटे नक़ली, नच्चे असली चेहरे
भंगड़े गिद्दे पौन, एह मेले कौन आ गया

अपने ही परछावें कोलों बच बच तुरदा
आखिर मरेया कौन, मरेले कौन आ गया

धुखदी धूनी विच्चों तिलक किसने कीता
साधू औंसी पौन, छुपेले, कौन आ गया

□

सदा 'माला' नहीं फिरदी, सदा पूजक नहीं रैंहदे
समें दी चाल जद बदले, बदल जांदे ने कुल चेहरे।

'तारेयां भरे हुंगारे'

मरजीवे दरवेश

एह मारे क़िस्मतां दे ने, एह तक़दीरां दे हेटे ने
एह मरजीवे जहे दरवेश, बंगाले दे बेटे ने।

इन्हां दी झोल दे दाने, इन्हां दे मुंह दियां ग्राईयां
जिन्हां नूं खा गया चानन अते भक्ख लेया स्याहियां
इन्हां दीआं बुड्ढियां मांवां अते भैनां अन व्याहियां
न रेहियां कंजकां धियां, नारां सोहल सज व्याहियां

एह बेले त्याग के आए ने, हीरां दे रंझेटे ने
एह मरजीवे जहे दरवेश, बंगाले दे बेटे ने।

नहीं हुन भाईयां दी बाहल ते बापू दियां पग्गां
नहीं बालां दे झोले भोल नहीं ती फटदियां रग्गां
पिरोचे विच संगीनां, यां सुट्टे साड़ के अग्गां
इन्हां दियां मुट्ठियां जंजां, इन्हां दियां त्रुट्टियां लग्गां

इन्हां दे लाल जोड़े शगुनां दे कफनी वलेटे ने
एह मरजीवे जहे दरवेश, बंगाले दे बेटे ने।

एह सुच्चे कच्च दे शीशे पलां दे विच तिड़के ने
ते चूढ़े रांगले, संदली जही, वीणा तो किड़के ने

उचेरे बुरनिए जहे मैहल वी, नीहां तो थिड़के ने
ते अत्त दे चानने नैनां दे बूहे, अद भिड़के ने

गुलाबी जुस्सेयां वाले, किसे बद रूह दी तरेटे ने
एह मरजीवे जहे दरवेश बंगाले दे बेटे ने।

चढ़ी काली जही हनेरी, हवावां लाल हो उठियां
एह धरती रत्तली हो गई फिज़ावां लाल हो उठियां
गगन तों खून दी बारिश घटावां लाल हो उठियां
भखी चेहरे ते इक लाली दिशावां लाल हो उठियां

एह उस लाली च नहा के प्रभात भेटे ने
एंह मरजीवे जहे दरवेश बंगाले दे बेटे ने।

एह मरियम है एह सीता है एह बीबी फातिमा वी ए
किसे दे दिल दी धड़कन, किसे दी आतमा वी ए
एह सृष्टि दी रचियता है ते उसदा ख़ातमा वी ए
एही ब्राह्मंड है सारा, अते परमात्मा वी ए

एह अक्षर ओपरे उकरे नहीं उमरे दी सलेटे ने
एह मरजीवे जहे दरवेश बंगाले दे बेटे ने।

एह नूर ओसदी हुन जिस दियां अक्खां च नूर है नहीं
एह ताज ओसदा है, जिसनूं ताजां दा फितूर है नहीं
सरूर ओहनां दे महके ने जिन्हां विच सरूर है नहीं
क़सूरे ने विचारे ओ जिन्हां दा कुज क़सूर है नहीं

कलेजे सोहल जहे ने एह जो जाबर दी चपेटे ने
एह मरजीवे जहे दरवेश बंगाले दे बेटे ने।

ओ लाशां दे लग्गे ढेर ते ढेरां ते ने लाशां
एह सरपट दौड़दे घोड़े जिन्हां दियां उलझियां रासां
इन्हां दी पीड़ सजरी ए अजे मिटियां नहीं घासां
एह पुतले संग मरमर दे जिन्हां ते उभरियां लासां

एह लाशां चों उपजदे भूत वतनां दे थमेटे ने
एह मरजीवे जहे दरवेश बंगाले दे बेटे ने।

एह नक़शा करबला दा ए यां मह भारत छिड़न दा ए
किसे हाथी दे सांवें खल के कीड़ी दे थिड़न दा ए
करिश्मा इक निहत्थे दा मुस्सलह नाल भिड़न दा ए
एह मौसम पतझड़ां दा है जां फुल्लां दे खिड़न दा ए

शमां दिल बाल जो बाली हैं एह उसदे भंभेटे ने
एह मरजीवे जहे दरवेश बंगाले दे बेटे ने।

एह रिश्ते नातेयां दे कुल मिलेवे भुल्ल के बैठे
एह आज़ादी दी ख़ातिर सब विखेवें भुल्ल के बैठे
एह मज़हबां दे ते मुल्कां दे भुलेवें भुल्ल के बैठे
एह अपने ते बेगाने दे रूसेवें भुल्ल के बैठे

इन्हां नाल विरोध काहदा ए, एह सबनां दे ललेटे ने
एह मरजीवे जहे दरवेश बंगाले दे बेटे ने।

कई शरनारथी होके मसां लै जान आए ने
करो स्वागत इन्हां दा परत एह महमान आए ने

एह परखन दे लेई पहली कोई पहचान आए ने
एह पाकिस्तानी नहीं ने, जो हिन्दोस्तान आए ने

ओही मुड़ नक्श उभरे ने किसे चन्दरे जो मेटे ने
एह मरजीवे जहे दरवेश बगाले दे बेटे ने ।

रलो लोको ते अगेरे वद्ध इन्हां नूं प्यार कर लैईए
गलां दा हार हो जाईए गले दा हार कर लेईए
समुन्दर हां असीं नदियां दा हस के सहार कर लेईए
मुड़ इक कैहर ढावन नूं ए छल्लां तैयार कर लेईए

कि एह गैरत दे, अनखां दे, बड़े उच्चे ममेटे ने
एह मरजीवे जहे दरवेश बंगाले दे बेटे ने ।



गीत

मेरा हो के दीवाना लगा आवीं तूं
कर के कोई बहाना लगा आवीं तूं ।

छोरे चुप्पां दे होवन वडेरे जदों
साए छांवां दे होवन घनेरे जदों
भखन जही मच पवे इक चुफेरे जदों
हो के सब तों बेगाना लगा आवीं तूं ।

भर लां नैनां दे दोवें प्याले जदों
मस्ती प्यारां दी पावे धमाले जदों
तैनूं सपने च देवां वखाले जदों
भुल्ल के सारा ज़माना लगा आवीं तूं ।

जद बुलावे कदी तैनूं काली घटा
जे बंगारे गी ज़ुल्फां दी बांकी छटा
तैनूं मौसम संभाले जे हो अटपटा
गौंदा कोई तराना लगा आवीं तूं ।

जदों सद्द पाए उमरां दी बुझदी शमां
राख सधरां दी चोखी हो जाए जमां
दिस्से वज़्म च क़तल दा बज्झेया समां
बन के इक परवाना लगा आवीं तूं ।

बन्द चांदी दी लाए जे रोकां कदीं
होनी रूपे दी लाए जे चोकां कदीं
परेया रक़ीबां दी लाए जे टोकां कदीं
बन्न के प्रीतां दा बाना लगा आवीं तूं ।

किधरे फसल चों साक़ी दी आवे सदा
सुरमई सांवली फैल जाए रिदा
हर अदा ते जदों दिल ही जाए फिदा
लै के दिल दा नज़राना लगा आवीं तूं

लोचां जे कर मैं चुन्नी सितारे जड़ी
लोचां मूरत कोई मन दे मैहलीं खड़ी
लोचां 'माला' कोई सुच्चे मोती जड़ी
बन के मनज़र सुहाना लगा आवीं तूं ।



ग़ज़ल

बे लगामे घोड़ेया—सर पट दौड़
अज दे असवार सब ने औड़ गौड़।

रक्त सब होया विषैला घुल रही साहां दी कौड़
लिज़लिज़े जहे जुस्सेयां विच भासदी रूहां नूं सौड़।

दग्ध हृदय जिऊन दी हुन न मार फौहड़
अग्ग चिखा दी मंगदी ए चम्म चमोड़।

तंद नहीं टुट्टी ए तानी सारा आवा ऊतेया
इक नहीं बिगड़ैल ऐथों एह तां है झुग्गा ही चौड़

कोढ़ मग़ज़ां नूं व्यथा मन दी न कहो
सुन के हस छड्डुन गे एह तां ने बला थौड़।

हर किसे नूं हर किसे तों गण्ध नहो व्यापदी
भिनभिनाहट मक्खियां दी हर जगह पैंदी ए बौढ़

हवन कुण्ड विच चरबियां दी घुलदी है उस वक्त
हथ अरगे विच है हंजुआं दी है औढ़।

गीटियां गिन छान रेता भुक्त अपने लेखे फल
छौलियां वंडदे नूं जद आई है हुन उमरां दी औढ़



कीह उलीकां

तूं नहीं सूरज कोई तूं चन्न दा टोटा नहीं
धरत तो वड्डा नहीं गगन तों छोटा नहीं

अक्ख दा हंजू नहीं ते सौन दा बद्दल नहीं
तूं नहीं मस्सेया दी कालिख नैन दा कज्जल नहीं

पवन दा बुल्ला नहीं ते महक वी फुल्लां दी नहीं
प्रीत दा कोई बोल नहीं ते फरक वी बुल्लां दी नहीं

तूं अमुल्ली दात ऐं ओ शै ए जो जांदी ए रुल्ल
नेड़ैंगा तेरे तुल कोई तूं किसे दे तुल नहीं

रूप नहीं तेरा कोई मद्धिम जहे कुज अक्स ने
कीह उलीकां चित्र तेरा धुंधले धुंधले नक्श ने



वसंती चोला

जदों रंगेया वसंती चोला — ऐनां रंगेया
सिर ते बन्न कफन तुरेया सब मस्तां दा टोला
ऐनां रंगेया वसंती चोला...

भक्त सिंह जहे वीर इन्हां गलियां विच ला गए नारा
हसदे हसदे चुम्म गए सूली जिन्हां नूं देश प्यारा
वतनां तों कुर्बान शिवाजी मां दा आला भोला

ऐनां रंगेया वसंती चोला...

गुरु गोबिंद सिंह जहे सूरमें गए देश तों वारी
रानी झांसी जही सदक़े होई वतन तों नारी
एह रंग अलमस्तां दा लोको अनमुल्ला अनतोला

ऐनां रंगेया वसंती चोला...

इस चोले दी लिश्क वी लोको कर गई चानन चानन
इस चानन दी रुत्ते बैठे सारे जीवन मानन
जिस रुत्ते, भरी सभा विच भड़केया अग्ग दा शोला

ऐनां रंगेया वसंती चोला...

पहन के वीर वसंती चोले तली ते धर के जानां
सिर दे आए मोड़ ले आए बदले दे विच आनां
उद्धम सिंह दे हत्थों फट्टेया इक सूरज दा गोला

ऐनां रंगेया वसंती चोला...

भारत दे कण कण विच रलियां सुड़ केसर दियां तुरियां
'माला' दे मनके दियां चमकां किरणां वन वन खुरियां
गाए शहीदां दी गाथा सतलुज दा जल वड़ बोला

ऐनां रंगेया वसंती चोला...

इस चोले दा झण्डा बनेया हो के लीरां लीरां
इक मिक होई जनता मिटियां मज़हबां दियां लकीरां
सत्य, अहिंसा अते एकता दा इक सांझा जेहा झोला

ऐनां रंगेया वसंती चोला...

उलरियां चोले दियां बाहां बनेया हार अनोखा
केसरिया रंग लहू च घुलिया तां चढ़ेया रंग चोखा
चोखा रंग रंगोएआ दे सिर मौत गवें पेई सोला

ऐनां रंगेया वसंती चोला...



ग़ज़ल

मरना किसे दे नाल, एह मैनूं क़बूल नहीं
जीवां किसे वगैर, एह मेरा असूल नहीं

जो मेरेयां लेखां दे विच मेखां चुभा गया
ओ तेरा रब्ब होवेगा मेरा रसूल नहीं

जिऊने दी मैनूं जाच है तूं मेरा जेरा वेख
उमरां लई विछुड़ी हां, पर होई मलूल नहीं

मेरे ही नक्श करदे हन, मेरी पछान नहीं
मैं दिल दा शीशा तोड़ेया, ऐवें फिज़ल नहीं

मुंह फेर तेरे द्वार तों मैं होंट सी लए
इक हरफ वी दुनियां तों मैं कीता वसूल नहीं

चेहरे किसे दी भखन जद अक्खां तपा गई
सीने च उठदा वेखेया, मैं कोई सूल नहीं

'जी आयां' तेरी याद नूं मैं आख न सकी
रोमां च रड़केया, कोई बबूल नहीं



अजीतां—झूझारां दी धरती

एह खेड़े दी दुनियां, बहारां दी धरती
एह महकां दी बस्ती, श्रंगारां दी धरती
एह पीरां, पैगम्बरां, अवतारां दी धरती
एह धरती शहीदां, सरदारां दी धरती

इस्से देश दी जन्मी नारी दे जाए
हनेरां च बन बन के चानन जो आए
जिन्हां आ गुलामी दे टैंटे मुकाए
ओ इस देश दे चन्न सूरज सदाए

ओनां दित्ती लो जेहड़ी ओ सारे ही वरती
एह धरती अजीतां, जूझारां दी धरती।

एह धरती बड़े अंग पालां दी धरती
एह धरती शहीद होए वालां दी धरती
एह धरती बड़े ही कमालां दी धरती
एह धरती गुरु गोबिंद दे लालां दी धरती

जिन्हां दी शहादत न होरां तों सरती
एह धरती अजीतां, जूझारां दी धरती।

ओनां बाले हर थां ते सूझां दे दीवे
सी वानी इच अमृत कि मोए वी जीवे

ओनां ताईं बल बख्शो, होए जो खीवे
ओ हेतां दे गण्डन लंगारे जो सीवे

ओना अनख अपनी किसे थां न हरती
एह धरती अजीतां जूझारां दी धरती।

ओनां पाई धू जैसी जाबर दे दिल नूं
ओनां मोम कीता सी, पत्थर दी सिल नूं
ओं रड़कन न देंदे सी, अक्खियां दे तिल नूं
ओनां चुप्प बखशी, शरीरां दी विल नूं

ओनां उत्ते होनी, नहीं केहड़ी वरती
एह धरती अजीतां, जूझारां दी धरती।

जदों देश उत्ते कोई बिपता आई
ओ होए हिमाला दे वांगू सहाई
ओ अपने वतन दे ने सच्चे सिपाही
गद्दारां दी जड़ ही सिरे तों मुकाई

ओनां दी रही इक्के कथनी ते करनी
एह धरती अजीतां, जूझारां दी धरती।

शहीदी ओनां दी गुलाबां संजोती
एह 'माला' रहे गी सदा ही पिरोती
हमेशा जले गी, एही अमर जोती
जिदी लिश्क ने स्याही रातां दी धोती

भक्त सिंह ते उद्धम दे ना दी समरिती
एह धरती अजीता, जूझारा दी धरती।

□

आज़ादी

राहू केतू चन्दरे दे रथ दा पैहिया खिसकेया
मुड़ मेरे बगाल दा सूरज सुनैहरा लिश्केया

मस्त है पद्मा दा पानी खा उछाले वग रिहा
दिस्सदा मस्सेया दी राते चन्न दा दीवा जग रिहा
अज गगना तों तारे, धरत उत्ते आ गए
जापदा ए अज धरत वासी अर्श फेरे ला गए

अज पहाड़ां दे गले लग लग के पौंना हस्सियां
अज मुड विरानिया विच महफिलां ने वस्सियां
अज मेरे टैगोर दे गीता नूं मुड़ वाणी मिली
लेखका दे हथ विच प्रीतां दी मुड़ कानी मिली

चाननी नाल धोतियां निखराइयां रातां कालियां
पतझड़ां विच अज खेड़ा, खेड़ेयां विच लालियां
अज ता धूड़ां दे विच अत्त दां नशा भर रिहा
अज ता नैनां चों वी खुशिया दा झरना झर रिहा

अज तां शरणागता दी मुक गई बे मे सरी
रांगला सूरज दा बाना हो गया ए केसरी
रोशनी दा हड़ जेहा है नज़र झुकदी बार बार
इक स्वाई जोत नूं हर कलम करदी नमस्कार

विश्व ख्याती दा मालिक किरतों अज सुजीव है
बंग बधु सब दा सांझा इसदा नाओं मुजीब है
वंदना है उस मा नूं जिसदी कुख चों एह जन्मेया
वंदना उस धरत नूं जित्थे एह पलेया पनपेया

वंदना उस सूझ नूं जिस लोक पीड़ा जानियां
वंदना 'रेणु' नूं जिसने इस तों प्रीतां मानियां
इस देश्रा भावां भरे सद्भाव दे भण्डार ने
इस देओं बोला नूं जनता दे मिले सत्कार ने

सादगी इसदी दे सांवे मात ने सब शोखियां
नब्ज़ टोली सारेया दी सब निगाहां घोखियां
हिन्द दी दंगाल दी इक प्रीत ऐसी पैं गई
उमर भर लेई निभन दी इक रीत जैसी पै गई

हर कला पूजक दा सिर जुकेया है इसदे सामने
ढ़लकदा सूरज दा रथ रूकेया है इसदे सामने
एह गुणी, गुण गाहकी है एस दा बड़ा नां शुमार
बन के जिस चानन दा राजा मेट दित्ता अंधकार



जंगी गीत

जे संग्राम छिड़ेया ते तां फिर चलेगा
हर इक योधा बैरी मले गा दले गा।

कोई थम्म धरती दा हिलनों नहीं रहना
गगन नाल धरती ने मिलनों नहीं रहना
तदों जीव जन्तू कोई चलनों नहीं रहना
फटेगा जदों अंतर दा लावा फटेगा

जे संग्राम......

हर इक देश वासी बनेगा सिपाही
ते ब्राह्मंड विच इक मचे गी तबाही
हनेरे दे मुंह ते पुते गी स्याही
परां धक्क देआ गे जो सावें खलेगा

जे संग्राम......

हर इक नार त्यागे गी सुरमें दन्दासे
ते पूजे गी शस्त्र, दरांती गंडासे
स्रो रणचण्डी बन के पलटे गी पासे
जे निश्चा जवानी दे संग आ रले गा

जें संग्रम......

जदों इक वी सिर बन्न कफन तुर पवेगा
ओहदे संग सारा वतन तुर पवेगा
जहान इक ए वेखन फबन तुर पवेगा
जां वैरी खला मोम वांगू घलेगा

जे संग्राम......

वंगारी किसे शान ता मर मिटां गे
वंगारी किसे आन ता मर मिटां गे
वंगारी किसे जान ता मर मिटां गे
समूचा लहू रौशनी लेई बलेगा

जे संग्राम......



ग़ज़ल

ओ वेखो—मार गई ओ तिक्खी कटारी मार गई
मार गई ओ—कजले दी धारी मार गई

तीर नज़रां दे उतर गए दिल दी विचली तै तले
कुज नहीं बुज्झेया किसे केहड़ी बिमारी मार गई

जिगर नूं पुट्टेया फिकर ने फिकर सी बस यार दा
जिस दी यारी विच जीवे, उसदी यारी मार गई

पीती उस ग्रक्ख चों दित्ता भुलेखा जाम दा
कीह पता साक़ी नूं ऐ केहड़ी ख़ुमारी मार गई

रब्ब दे पज्ज हर समें लैंदे रहे नां यार दा
यार ही रब्ब हो गया, एह यारदारी मार गई

फुल्ल अज करदे पए ने बाग नूं निलाम खुद
कण्डेयां दी झोल विच कलियां दी खारी मार गई

ज्युन्दियां जिस नूं वेखने लेई मर गए हां, मर गए
लोथ ओसे दी बड़ी प्यारी श्रंगारी मार गई

बोल कौड़े वी किसे दे, घोलदे मिट्ठत गए
बुलबुलां नूं हौकेयां दी ही, उचारी मार गई

जाप 'माला' दा उचेरा, वी न उस तक पहुंचेया
हाक मेरी तों ओहदी, उच्ची अटारी मार गई



मुशाहिदे

भरी सभा विच द्रोपद बैठी, वेखी चीर बिना
गहरी नदिया शूकदी वैंहदी वेखी, नीर बिना
भरवीं छाती मां दी थलकी वेखी सीर बिना
विच दरगाहां, चेले चांटे, वेखे पीर बिना

——

बिना रुत्तां दे मौसम डिट्ठे, बिना महीने साल
बिना हवा दे पौनां तक्कियां, बिना टोएयां दे ख़ाल
बिना पानी दे मछली जीवे, बिन कण्डे दे जाल
बिन पैरां दे नाची वेखी, बिन हत्थां दे ताल

——

बिना चेहरेयां दे धड़ वेखे, बिना जिस्मां दे रूह
बिना वेदना दे मन डिट्ठे, बिना लज्ज दे खूह
बिना अक़ीदे पूजक वेखे, जपन पए तू तू
बिना जीभ दे चाखे वेखे, बिना स्वाद थू थू

——

बिना हनेरे दे चानन तकेया, बिना दिहूं दे रातां
बिना लिखितां तक़दीरां तक्क़ियां, बिन बाज़ी दे मातां

बिना वापरे कहानियां बनियां, बिना हुँगारे बातां
बिना ठारे दे पाला तकेया, बिन वदलों बरसातां

——

बिना प्यार दे जोड़े वेखे, बिना जज़्बे कुर्बानी
बिना ज्ञान दे वाची गीता, बिना गुरु गुरुबानी
बिना ताज दे राजा तकेया, बिना मुकुट महारानी
बिना सम्पती लक्ष्मी वेखी, बिना ही शब्दों हानी

——

विना सार दे सैनत वेखी, बिना लगामों घोड़े
बिना अक्ख दे नीझा वेखी, बिना पीड़ दे फोड़े
बिना खम्ब दे उड्डना तकेया, बिना रूई दे गोड़े
बिना कमाइयों किरतां तक्कियां, बिना ही मेल विछोड़े

——

बिन बदलों बदलाखे अम्बर, बिना रात दे तारे
बिना सुरां दे गाना सुनेया, बिना संघ दे नारे
विना कध दे कोठे वेखे, बिना मिट्टियों गारे
बिना स्वासां दे धड़कन वेखी, बिना वादेम्रों लारे
बिना बुद्ध दे बुद्धि उपजे, बिना ही राह—कुराहे
बिनां सूझ दे सरे न सोझी, बिना ही भाल दोराहे



मेरा बेटा लाडी

गबरू बांका छैल छबीला
अत्त चंचल, अत्त ही शर्मीला
साबर, शाकिर, चुप चपीता
पर डाहडा मानी, अनखीला

दिस्से क़द, सरू दा बूटा
प्यार ओहदा स्वर्गां दा भूटा
घर विच इंज छोपले आवे
जींवें प्रौहना, फेरा पावे

वासा बंजारे दा डेरा
फेरा ज्यूं जोगी दा फेरा
ईवें अपनी मंग दोहरावे
जीवें याचक पित्त खड़कावे

कदे कदे होमां दर्शावे
ऐवें रोब पेया बर्तावे
ओ मेरे वेहड़े दा चानन
ओ दीवा ! मेरे भागां दा
ओ मोती मेरे नैनां दा
ओ माली मेरे बागां दा

रंग ओसदा तपदा तांबा
जोवन जीवें अग्ग दा लांबा

ओ हल्ले तां सृष्टि हल्ले
ओ चल्ले तां अम्बर चल्ले

ओ ठहरे तां दरिया ठहरे
ओ वैहरे तां परलैय वैहरे

सूरतों जीवें कृष्ण कन्हैया
पैर वी थिरकन, ता-ता थैय्या

जामें विच ऐसा सज्जे
वेख वेख के जी न रज्जे

बोल ओहदे मेरा सिरनावां
जापे ओ मेरा परछावां

ओ मेरे प्यारां दा मन्दिर
वस्से मेरे, हृदय अन्दर

मस्त मलंग है दौला मौला
पूरा अपने प्यू दा झौला

रुस्से तां उजड़न गुलज़ारां
हस्से तां हस्स पैन बहारां

खिड़या प्यार दा इक चमन ए
जापे, दूजा विजय सुमन ए

ओ ही, मेरा अन्तर मन है
जो होरां दा विजय सपन है

मेरी उसदी प्रीत है डाहडी
ओ है, मेरा बेटा लाडी

□

अमर है

मैं ते भर अक्खियां च हंजू
दिल दे लहू विच घोल वेदन
पीड़ भर कान्नी दी नोके
सोग धर हरफां दे मत्थे
नीझ नूं इक ला के काम्बा
गुंग कर के जीभ अपनी
श्वास तण्डड़ी झुनझुना के
नाड़ां विच झरनाट भर के
स्थिर कर के वेहन शक्ति
वेखदी तस्वीर उसदी
जो असां तों दूर किधरे
गगन दी नीली रिदा ते
बन के तारा चमकदा ए—लिश्कदा ए
जो हर हनेरीं रात दे विच
चाननीं नूं मात पाऊंदा
ओ असां विच
अज नहीं है—!

चौखटे यादां दे विच

जड़ेया दा इक सिरजीव बुत्त—शायर दा
उस शायर दा
जो पंजाब दी लगरां छडदा, पीपल दा बूटा
जिसदी छांवें, आ के सब
अपने, बेगाने बैठदे ने,

जिसदे हर पत्ते चों इक सीटी जहो वजदी
ते वाजां मारदी ए
प्यार सांझा पाऊन नूं
जिसदी हर डाले ते पींगां ने, हुलारे लैन नूं
जिसदी हर तासीर
हर तासीर दे बन्दे नूं ग्रा जांदी ए रास—!!

ग्रो है प्रीतां दी क्यारी विच खिड़ेया
महकदा सोहना गुलाब
जिसदी रंगत ते समें दी धूड़ दा
फिरदा नहीं पोचा
जिस दियां पत्तियां कदी कुम्हलौना नहीं, खिडना नहीं
जिसदी खुश्बू ने कदे झौना नहीं—मुकना नहीं
जिस दियां हरियां जड़ां
बिन पानियों सुकना नहीं !!!

जिस दियां किरतां दी किस्मत दा नहीं डुब्बना सितारा
जिस दियां सोचां दी बेड़ी
सूझ दे शोह विच तरेंदी
उसनूं हाकां मारदा ग्रापे किनारा !!!!

जिस दी ऐनक दे नहीं नम्बर बदलदे हर वरहे
जो नहीं धुंधलान देंदा नज़र अपनी
वेखदा ए साफ ते—लिखदा हैं ओ
जो खुद मसूसे,
इक पीड़ां ब्यानदा ए
लोक गीतां दा लिखारी
गीत जिसदे गूंजदे ने, नज़म जिसदी गांवदी ए
जेहड़ा है 'वारिस' सदीदा
जिसदी कविता जींवदी ए—जींवदी!!!!!

परवान चढ़दी, ते कलाकारां दे गल पाऊंदी ए जप्फियां
छोह के भावां ओसदे नूं
निघ मिलदा ए रूह नूं
क्यों कि उसदी लिखित नूं

सुच्चे मिले लफज़ां दे जामें
जामेयां नूं वी मिले
जज़बात दी वलगन दे—ओहले
ओहलेयां विच ओस दी क़ायम जवानी
जिस दियां किरतां दे सिर आऊनां नहीं
कोई इक वी धौला !!!!!!

जिस दी रचनावां चेहरे
खेडनां नहीं झुरड़ियां ने
जिस देआं शब्दां ने फड़नी नहीं डंगोरी
जो हमेशा अमर है—मरदा नहीं

हुन्दा नहीं बुड्ढा
ओ ग्रसां विच कद नहीं है ?
ओ ग्रसां विच कल वी सी
ते ग्रसां विच अज वी है
ते रहे गा विच ग्रसां दे भलक नूं वी
क्योंकि उसदी कविता दे पाठक ग्रनेकां
उस देग्रां गीतां दे गायक बहुतेरे
पारखी उसदी कला दे बहुत ने
ओ ग्रसां विच है हमेशा
ते हमेशा ही रहेगा !!?!!!!



ग़ज़ल

मंग कीती सी किसे तों, इक तकनी प्यार दी
जांदे जांदे दे गए ने, इक नज़र तिरस्कार दी

रौनकां दीवानेयां दे नाल रैंहियां सज्जनों
बिन ओनां दे हर गली, सुन्नी है अज बाज़ार दी

रोहड़ के सब बेड़ियां, बैठे किनारे ज्यों मल्लाह
इस तरह ही हो गई, हालत है अज संसार दी

बाढ़ खा गई खेत नूं, खलियान दाने खा गए
इक्को जही नीयत है, बन्दे दी ते करतार दी

बादशाह जहांगीर दे, इन्साफ दी तस्वीर ओ
भुल्ल गई है खनखनाना ज़ंजीर उस दरबार दी

हाल मन्दे रहे असां दे, होरनां तों दोस्तो
साहनूं साहडे सज्जनां दी सोच रही ए मारदी

किसनूं अपनी हिफाज़त सौंप होईए सुरखरू
जापदी अज नीत ही, बदनीत पहरेदार दी

चोग पर इक जाल सुट्ट, शिकारी ओहले बैह गए
साथियो ! बचियो कि है साज़श किसे ग़द्दार दी

पर सलामत नहीं रहे, पंछी उडारां भरन कीह
अज मुख़ालिफ हो गई सारी हवा गुलज़ार दी

इक दहशत व्याप रही ए, वैहशतां दे दौर नूं
जड़ पतालों हिल गई, जाबर दी ते खूंखार दी

आ गए ने रल के अमलां दे नबेड़े करन लेई
हुन रता फरमा देओ, मर्ज़ी है कीह सरकार दी

हुन कली श्रंगार लई, सोचे, तां सोचे कास लेई
वेख लेई फुल्लां दे सीने, नोक चुभ्भी ख़ार दी

हुन कीवें फेरो गे 'माला', पूजको ते साधको
जद के माला बन गई, धागे दे थां ते तार दी

□

वसाखी

मिट्टी धोती, कंचन कीती
चंदन लिप्पी, ठण्डक कीती
तरेल वराई, श्रौंका दित्ता
चानणी श्राई, चौंका दित्ता

जागे तारेयां दी लोई विच
महक पौन, खुश्बोई विच
बदलां गल घंघरैल सजाए
सुक्खते जट्ट, खेतां बल जाए
चट लशकाए, तेल चूश्राए
शगनां दे नाल बीज उगाए

रोम रोम धुप्पां विच गाले
सिरों लंघाए, स्याल हुनाले
श्रपना परसा, खून बनाए
तां कनकां ते रंगत आए

जट्टी लै भत्ते दी थाली
खेत नूं जाए करमां वाली
जद कोई बालो माहिया गाए
तद बली विच दाना आए

जद कनकां पर जोबन आवे
तद कोई सद्द वंझली दी पावे

थां थां बौहल होन मुस्कांदे
खेतीहर दा मन मोह जांदे
रुत्त होवे लाखी बदलाखी
करदा रहे कनकां दी राखी

वस्से रब्ब खेतां दे अन्दर
ऐहो इसदे मस्जिद मन्दिर
ऐहो ने इसदे गुरुद्वारे
जिस चों रब्ब दे पैन झलारे

ढ़ोली डगा, ढोल नूं लाए
मार दमामे, जट्ट मेले आए
जट्टी पैरीं, झांजर पावे
छनन मनक गिद्धे विच आवे

मुक जावे पैली दी राखी
आवे भांगां भरी वैसाखी
आवे मौजां भरी वैसाखी
मुक जाए, कनकां दी राखी



गीत

दिल बादशाह सी कंगला फ़क़ीर हो गया
ऐवें बोलां दा बज्झेया, असीर हो गया
केहड़े नैनां चों ज्योती जही झांकदी रही
मेरे मत्थे उत्तों लेख, मेरे आंकदी रही
तां ही मेरा नसीबा अमीर हो गया
दिल बादशाह सी कंगला फकीर हो गया
तेरी याद वी मैनूं कल्लेयां रैहन न दवे
नाल रल के किसे दे, रैहन वैहन न दवे
ऐवें सोच सोच चित्त दिलगीर हो गया
मन बादशाह सी कंगला फकीर हो गया
सदा मान सरोवरां च नहांवदी रही
सद्दे खड़ के दोमेलां उत्तों पांवदी रही
जित्थे मिलना ही, मिलन अखीर हो गया
मन बादशाह सी, कंगला फकीर हो गया
मेरे साहां विच्चों उड्ड सारी महक गई
मेरे तन विच्चों खिड सारी लहक गई
जापे सुन्न जेहा, सारा ही शरीर हो गया
दिल बादशाह सी, कंगला फकीर हो गया



बीबी सरन कौर

रोंदी पेई मनुखता, ज़ुल्मी हस्स रिहा
अम्बर दा दिल फटेया, ते लहू वस रिहा
इक चम्बे दी डाली, झक्खड़ झुल्ल रिहा
झोली महक समेटी, फुल्ल दा मुल्ल रिहा

गज़ गज़ लम्मी ज़ुल्फ गले विच पाई दी
ओसे ज़ुल्फ दी फाही, अबला लाई दी
सरन कौर जेही बीबी, बिन ब्याही दी
भभकां वाली सिंघनी, पिंजरे पाई दी

अन खिले जहे फुल्ल, डाल तों टुट्टे दे
नेज़ेआं उप्पर उछाल के बच्चे सुट्टे दे
कर हड्डियां दा चूरा, चक्की पीठा दा
मां दी पत्तल, बाल दा जिगर परीठा दा

अनख आन दी खातिर, लक्ख तस्सीहे ने
लक्ख तस्सीहे सह के वी, ओ जीए ने
लाह लाह पुठियां खल्लां ज़ुल्मी टंग रहे
जबर ज़ुल्म नूं वेख के, कुदरत दंग रहे



ग़ज़ल

युग बदले गा, युग बदलन गे
एह ऐवें बोलां दी चत्थ ए।

द्वापर, त्रेता, सतयुग, कलयुग
सब दी करनी भैड़ भड़त्थ ए।

किस धोखे ने ग्रह ते गोचर
बीत रही जो, सो ही तथ ए।

समें दा घोड़ा मूंदे मुंह ए
अन सिखिए ने जोता रथ ए।

उग्गन दे न धड़ जादू दे
अज दी सोच बड़ी सरलथ ए।

बे अक़लां दी भरी सभा विच
इक आक़ल दी काहदी सथ ए।

मन्दी ते चंगी दा बदला
कलयुग विच हत्थो हत्थ ए।

कोई परिवर्तन नहीं दिसदा
ओ ही नकेल, ते ओ ही नथ ए।

मुड़ जीवन रजवां जीवां गे
किसे कमले दी आखी कथ ए।



ननकाने नूं

ਜਿੰਦੇ चल चलिए ननकाने नूं
गुरु पीर दे ओस टकाने नूं

जिंदे चल चलिए......

जित्थें बंजरां विच फुल्ल खिल जावन
जित्थें चाक जिगर दे सिल जावन
जित्थें भुल्लेश्रां नूं पंथ मिल जावन

इक श्रोम दा नाम ध्याने नूं
जिंदे चल चलिए ननकाने नूं

जित्थें वाह लगदे नहीं ट्रुच्चेयां दे
जित्थें वाह लगदे नहीं उच्चेयां दे
जित्थें वनज वी हुन्दे सुच्चेयां दे।

तेरा तेरा समझाने नूं
जिंदे चल चलिए ननकाने नूं

जित्थें कौड़ न कौड़ी हुन्दी ए
जित्थें धरत न सौड़ी हुन्दी ए
जित्थें छाती चौड़ों हुन्दी ए

हर वेदन दे खप जाने नूं
जिंदे चल चलिए ननकाने नूं

जित्थें हीने गल नाल लगदे दे
जित्थें प्यार लेई मन मघदे ने
नैनां दे दीवे जगदे ने

इक ज्योती जोत समाने नूं
जिंदे चल चलिए ननकाने नूं



दुनियां दी गहमा गहमी, अपने किसे न लेखे
इतने भरे नगर चों, अनजान जा रही हां।

'तारेयां भरे हुंगारे'

चौबर्गे

मौत दी वादी च भटकन वालेयो
जिंदगी सैहरा है, कैसा लाजवाब
हर वरहे पढ़ के वरक़ परतांवदी
उम्र है, ठप्पी दी जीवें इक किताब

——

स्वर्गां दा नरकां दा झंझट किस लेई
आदमी अमलां दा ख़ुद कर लै हिसाब
इस तरह मेले इच मिल पैंदे ने मीत
जिस तरह जागे च आ जांदा ए ख्वाब







